



नामकी एक : रूप अनेक

रवर्ण सूदन

ज्ञान प्रकाशन मंदिर  
बीकानेर

कापी राइट - लेखिका

प्रकाशक 'ज्ञान प्रकाशन मंदिर

गोरी निवास 2 व 5 पवनपुरी

बीकानेर दूरभाष 5955

मूल्य पच्चीस रु मात्र

मुद्रक जनसेवी प्रिण्टर्स, बीकानेर

## अनुक्रम

परिचय	1
सक्षिप्त जीवन वृत्त	8
नारी के रूप में	19
पति के रूप में	32
मा के रूप में	47
राजनेता के रूप में	57
सफल राजनीतिज्ञ	75

'इन्दिरा गांधी का व्यक्तित्व इतना व्यापक मर्यादित एवं मध्यमगील था उसको शब्दा की सत्ता में बाधना असम्भव है। इंग्लिश विभिन्न लेखकों एवं विचारकों ने अलग अलग रूपों में चित्रित किया है। अधिक विचार का उनके व्यक्तित्व गुणों को ही सराहा है जिसका अर्थ निकलता है कि वह राजनीति जिसमें बूटनीति को भी समाहित करना होता है उनके लिए गौरव थी।

— स्वर्ण सूदन

## परिचय

31 अक्टूबर, 1984 की दोपहर। समय जैसे ठहर सा गया हो। इतना वज्रपात। विश्वासघात का इतना घृणित व घिनौना रूप। स्वयं अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा। पूरा राजकीय सूचना के अभाव में अटकलें लगाती टोलिया। देहली के आयुर्विज्ञान संस्थान के बाहर भीड़ का सैलाब। भारत जैसे देश में जहाँ पराई नारी को छूना भी पाप समझा जाता रहा है, चरित्र-हीनता की श्रेणी में आता है, वही पर सुदूर यद्यपि आयु के सायब्रस होती नारी देह को उसको जो कि न केवल देश की लम्बे समय से प्रधानमंत्री ही रही वरन् जनता के जनमानस में उसने वाली, को गोलिया से छाननी-छलनी करके पृथ्वी पर गिरा देना और उनके द्वारा जिनके ऊपर उनकी रक्षा का उत्तरदायित्व था, भारतीय इतिहास की अनहानी घटना है। रक्षक ही भक्षक बन गया और उनके स्वयं के ही निवास-स्थान पर, जबकि पूणतया असावधान थी, उनकी हत्या कर दी गई। पारस्परिक विश्वास व निभरता की मानो मृत्यु हो गई हो।

वही साफ हृदय में पीडा लिए हुए उस नारी देह के दशनाथ नारे लगाते हुए अस्थाय नर-नारी व बच्चे। मृत्यु जैसी स्तब्धता, पूरे देश की सड़कें सुनसान। सभी उत्सुक अपनी दिवंगत नेता के दशनार्थ-टी वी से प्रसारण प्रारम्भ हुआ और सम्पूर्ण देश के लोग ने प्रयास किया कि

यही 7 वही स टी यी द्वारा उनके दशा प्राप्त कर लिए जाए। "मों  
 एा वट की नहीं मरी है, सम्पूर्ण देशवासिया की मरी है" ऐसा अनुभव,  
 एसी चुनन। सम्भवत इस देश के जनवासिया म ऐसी मिलती-जुलती  
 प्रतिनिधा पहली बार ही हुई हो। 36 वष पूव भी हिमा के अधकार  
 ने इसी तरह युष्ठा रिया या सत्य, अहिंसा और प्रकाश वा वह आकाश  
 दीप। सबको स्मरण आ रहा है 30 जनवरी 1948 का वह दिन, जिस  
 दिन इसी प्रकार ही एक दब देह को छतनी कर दिया था गोलिया मे।  
 महात्मा गांधी को, जिसने की भारत के लिए स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व  
 कर असभव को सभव कर दिखाया था मृत्यु शया पर मुना दिया था। कि तु  
 आज भी स्थिति व उस समय की परिस्थिति मे कुछ अंतर है। आज कुछ  
 उभरते हुए प्रश्न बिल्कुल सबके सम्मुख उपस्थित हो गए हैं। रक्षक  
 ही जब रक्षक बन जाए तो प्रमुख हरितियों का रक्षा का भार कौन वहनकरें?  
 क्या विश्वासघात वा इससे भी बढकर और कोई उदाहरण हो सकता  
 है? इसके अतिरिक्त असह्य प्रश्न जनमानस पर उभर कर आ रहे हैं।  
 यदि इतने बडे देश की प्रधानमूनी की ही सुरक्षा सम्भव नहीं तो एक  
 साधारण नारी की रक्षा असामाजिक तत्वा से कस हो सकती है? क्या  
 इतनी प्रगति करने के पश्चात् भी हम हिंसा से अपनी रक्षा का कोई  
 उपाय नहीं कर सकते? क्या सबसम्मति से उठाया गया कदम एक व्यक्ति  
 के लिए जानलेवा हो सकता है? क्या हिंसा व आतंकवाद का आश्रित  
 कोई भी समाज मनचाही मागें रखकर देश की सत्ता समाले व्यक्तियों का  
 क्षण भर मे ही मौत के घाट उतार सकता है? इन सब का परिणाम  
 क्या देश की अखण्डता को खतरा नहीं उत्पन्न कर देता?

नवस्वतंत्र और विकासशील देशो मे केवल भारत ही ऐसा  
 देश है जिसन राजनीति से हिंसा को दूर करके लोकतांत्रिक शासन  
 व्यवस्था को सुरक्षित रखा है। सत्ता परितन भी हुए लेकिन मतदाताओं  
 के फंमल से व शांतिपूर्ण ढंग से। लेकिन तीन-चार बर्षों से देश की  
 राजनीति म तनाव और हिंसा का जो विष व्याप्त हो गया। उसने एक

साथ कई प्रश्न उत्पन्न कर दिए। क्या इन्दिरा गांधी की हत्या एक व्यक्ति की, किसी देश के नेता की या किसी प्रधानमंत्री की हत्या मान न रह कर हमारे भादवों की हत्या है? उन सपना की हत्या है जा अब तय देखते रहें? और इसके साथ ही एक और प्रश्न उभर कर घाता है—जब इतनी सुरक्षा व्यवस्था होत हुए भी अपनी प्रधानमंत्री की रक्षा कुछ चुने हुए तथा-व्यक्त उग्रवादियों से नहीं कर सके ता हमार सम्पूर्ण देश की सुरक्षा का क्या होगा? विशेषकर उस समय जब कुछ शक्तिया गिद्ध श्रांखो स हमार दग की सम्भावनाभा पर दृष्टि रमे हैं।

एक प्रश्न चिह्न हमारे सामने और वह खडा है और लोकतन्त्र के लिए है। वई दग यदि सत्ता के लिए दग की अमण्डता से खिलवाड करने लग तो, वह लोकतन्त्र म असह्य है। जो कुछ पजाव मे हिंसा और आतंक को दवान के लिए किया गया उसमे सम्पूर्ण राष्ट्र की सहमति थी फिर इन्दिरा जी का जीवन तो के लिए इतना बडा विद्वान घात करना। क्या लोकतन्त्र के सामने एक भयावह प्रश्न चिह्न बनकर नही खडा है?

आज हमार बीच बितने ही 'यक्ति है जो सवश्व अणुण कर देत उस पुनीत जीवन के लिए जिसे अपन अब मे भरकर मरण भी घय हो उठा। पुरानी विरासत स आधुनिक विकात तब जो कुछ भी है, सबका साधक प्रतीक बन गई थी 'इन्दिरा गांधी' श्रीमती इन्दिरा गांधी कितनी विलक्षण प्रतिभा की धनी थी। यह आज, उनके विरोधी, विपक्षी दला के नेता विदगी व अय सभी एकमत से जानते हैं। 'मेरी स्टोन' के शब्दा म 'उनमे किसी भी काय को सभालने की क्षमता है। वह एक अत्यन्त वितक्षण तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व वाली महिला है।' यह प्रतिभा केवल उनको विरासत से ही नहीं मिली थी अपितु उ होने स्वयं भी प्रयत्नशील होकर उसे विकसित किया था। श्री लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु के पश्चात् धुर-धर राजनीतिज्ञो ने यही सोचा था कि उनके हाथों की कठपूतली बनकर रह जायेगी। किन्तु उ होने कुछ ही समय में यह सिद्ध कर दिवा दिया कि वह कठपूतली स्वयं नही बनगी वरन् दूसरा को बना



देगी । 16 वर्षों में उन्हा । अक्षर तामा को अपनी अगुतियों पर नचा  
 निया जो कि उनके असाधारण व्यक्तित्व का द्योतक है ?

समूची मानवता का जा बांग उठा है, इस मनहोनी से । सारे  
 भूमण्डल ने दक्षित पीडिता, दापिता, सत्रस्ता की आवाओं व आवाक्षाओं  
 का उन्हा दीप उज्ज्वल बुझ गया । इस युग की सबसे उज्ज्वल दीपशिखा  
 भारत ज्योति में ली हो गई ?

परिहास में एक बार इंदिरा गांधी ने किसी से कहा था विदेशी  
 पत्रकारों के अनुसार वे पोप के बाद दुनिया की सबसे चर्चित और परि-  
 चित व्यक्तित्व हैं । इस अति चर्चा के परिणामस्वरूप कभी उन्हा 'सिंहवाहिनी  
 दुर्गा' की सना ली गई तो कभी "ईश्यालु वाली" की, कभी उन्हा विश्व की  
 महान्तम महिला, राजनीतिज्ञ बताया गया तो कभी एक अहवादी ताना-  
 शाह । पर सच्चाई गामद इन दोनों ध्रुवों के बीच बही थी । 'श्रीमती  
 टालर' ने एक बार नेहरू जी को लिखा था । 'बाहरी और भीतरी दृष्टि से  
 इंदिरा न केवल अत्यंत सुंदर है अपितु इतनी पावन है कि वह मुझे एक  
 सुंदर एवं सुगंधपूर्ण पृष्प की भांति कोमल, अत्यंत रुचिकर  
 तथा हृदय को धु देने वाली लगती है । श्रीमती गांधी का व्यक्ति-  
 त्व इतना विशाल, इतना बहुमुखी एवं वचस्वितापूर्ण था कि उसे एक  
 दृष्टि से सीमित कर किसी परिभाषा में बाधने का प्रयत्न सदा अपूर्ण व  
 असफल रहेगा । प्रधानमंत्री बनने से पहले से ही इंदिरा जी भारतीय  
 राजनीतिज्ञ आवांग में एक तेजोमय नक्षत्र की तरह चमकती रही किंतु  
 प्रधानमंत्री बनने के बाद उन्हाने जिस साहस एवं दृढता से कांग्रेस को  
 पुनर्जीवित किया, राजनतिक दौंव-पेच में जिस सूझ बूझ से सफल पास  
 पके और दिग्गजों को पराजित किया तथा विश्वमंच पर जो अवि-  
 स्मरणीय भूमिका निभाई उसे देखते हुए ससार के मजे हुए राजनीतिज्ञ  
 एवं कूटनायक इस महिमायुगी भारतीय नारी व आग श्रद्धा से झुक जाते  
 थ । वस्तुतः श्रीमती गांधी राष्ट्र की सजग प्रहरी थी शक्ति से भरपूर,  
 साहस से भरपूर और निर्भीक ।

इन्दिरा गांधी का व्यक्तित्व इतना व्यापक सवेदनशील एवं सधपशील था उसको शब्दों की समा में बाधना असम्भव है। इसीलिए विभिन्न लेखकों एवं विचारकों ने अलग अलग रूपों में चित्रित किया है। अथर्व विचार का उनके नैव्यक्तिक गुणों को ही सराहा है जिसका अर्थ निकलता है कि वह राजनीति जिसमें कूटनीति को भी समाहित करना होता है, उनके लिए गौरव थी। उनके लिए मानवीय क्षेत्र में चमकते हुए गुणों को जीवन में टालना प्रमुख था।

इन्दिरा जी ने सधपों के वातावरण में आरंभ केली और सधप की ही धूरी पीकर वह एक सधपशील महिला बनी और सधप पसंद करती थी इसका प्रमाण इस रूप में मिलता है कि एक बार पत्रकार सम्मेलन में उन्होंने कहा था "मैं आपके लिए और देशवासियों के लिए सहज, सुखमय जीवन की कामना नहीं करती। मैं चाहती हू कि नई चुनौतियाँ आर्य और आपको उनपर विजय करने की शक्ति हासिल हो।"

अपनी कायप्रणाली के सम्बंध में प्रबुद्ध महिलाओं की हिंदी पत्रिका 'वामा' के लिए दिए गए साक्षात्कार में उन्होंने कहा था। जब हम काम करते हैं तो अपने को स्त्री या पुरुष समझकर नहीं, एक काम है जिसे ठीक से किया जाना चाहिए, उसे हम ठीक से करना होता है। उनसे पहली बार मिलने पर लगभग हर व्यक्ति की यही प्रतिक्रिया होती थी कि इतनी शक्तिशाली व सत्तावान कही जाने वाली इस महिला का व्यक्तित्व कितना नारीत्वपूर्ण व कोमल है।

एक शताब्दी 68 साल तक पहुंचते पहुंचते असमय खत्म हो गई। श्रीमती इन्दिरा गांधी का पार्थिव शरीर सदा के लिए पंचतत्त्व में लीन हो गया। उन्हें एक कविता की दो पंक्तियाँ बहुत प्रिय थीं—

'अपनी पल्लुडिया के खोल में बंद कर लो, गुलाबों उछलने दे।  
मरी साँसें बिला सकती हैं पूरा बगीचा  
मरी हथेलियाँ में सोया है एक समूचा जगल'

वही सास सदा के लिए टूट गईं वे हथेलियां निर्जीव हो गईं एक महाकाव्य अधूरा रह गया । उनकी सब यात्रा का आत्मो देना हाल सुनाने वाला उदयापक बोल उठा सुकरात को विप दिया गया, ईसा की हथेलियों में बोल टाकी गई, गांधी को गोली मारी गई और इन्दिरा जी की नारी देह को छत्रनी छलनी कर दिया गया । ' इतिहास में लिखा जायेगा ' कि जनसेवा में डूबी, जगमग करती हुई एक नारी को उसके वक्तव्यपथ से रोक दिया गया ।" इस बदकिस्मत 84 में भी ऐसा हुआ था, 18 में भी हुआ और 84 में भी । '31 अक्टूबर, 1984 की सुबह विश्व की वह महान् नेता उठ गईं । जिसे सारे ससार की साधारण और सताई हुई मानवीयता का शक्ति केन्द्र प्रेरणा स्रोत माना जाता था ।" फिलिस्तीनी नेता अराफान का यह अन्तिम सलाम सारी तीसरी दुनिया का समवेत गोबानुल मलाम था । प्रयात सगीनज्ञ जहीन मेहता ने कहा, जो हमारे हिन्दुस्तान के दिल में गोली मारना चाहते थे उन्होंने इस बार बिल्कुल सही निशाना चुना है हम सबके दिलों में गोली लगी है । ' इसमें कोई सन्देह नहीं कि एक तेज पुण जो एक नारी के रूप में भारत में अवतरित हुआ और जिसका प्रकाश सम्पूर्ण लोक में व्याप्त हो गया था हमारे ही दुष्कर्मों के प्रभाव से सदा के लिए नूय में विलीन हो गया है । ऐसा तजस्वी समय अब साहसी तजयग क्या पृथ्वी पर बार-बार अवतरित होता है । हम भारतवासियों को भाग्यवत् हर मुश्किल शासन करने वाली जो विलक्षण नेता मिली थी वही विलक्षण शक्ति हमारे देशवासियों की गोलियों की हृदयहीन बीछार से निष्प्राण हो गई ?

' इन्दिरा गांधी भारत की सबसे विवादास्पद और शक्तिशाली प्रधानमंत्री ही नहीं थीं, एक युग का प्रारम्भ और अन्त भी थीं" गिद्धों दो हजार वर्षों की गुलामी और पराजय को यदि किसी ने मोड़ दिया तो वह इन्दिराजी ने । हर बार आक्रमणकारी अते हमें पराजित व पददलित कर चले जाते । पराजय टूटन विखराव जस हमारी नियति बन गई थी । पहली बार उन्होंने हम बताया था निस्वाय विजय का उत्थास क्या होता

है ? एक पिछे हुए लेकिन स्वतंत्र देश का स्वाभिमान क्या होता है ? जो सातवें वेडे की धमकी के बावजूद इनडर अपनी विजय यात्रा पूरी कर लेता है और वह विजय यात्रा भी ऐसी जिसमें किसी देश को विजयी करने की या अधिकार करने की दुरभासधि नहीं, किसी को अपमानितकरण की लालसा नहीं, अपितु 'याय का पक्ष लेकर लडने की निष्ठा और विजयी होने का विश्वास धारा धमयुग है ।

वस्तुतः इंदिरा जी का व्यक्तित्व—अनेक मानवीय गुणों का एक सम्मिलित आगार था राष्ट्र था ऐसे व्यक्तित्व का नेता कभी—कभी सौभाग्य से मिलता है ।

□

## सांक्षिप्त जीवन-वृत्त

19 नवम्बर 1971, तीर्थराज प्रयाग के सगम के किनारे श्री मोतीलाल नेहरू के स्वराज्य भवन के आगम में खिल उठा था वह लाल गुलाब जिसकी सुरभि कुछ ही समय में ससार में फल गई। 1917 में एक बघाई पत्र में भारत कोकिला 'श्रीमती सरोजनी नायडू ने लिखा था। "सबको स्नेह एव भारत की नई आत्मा का प्यार।" स्वराज्य भवन में, जो कि स्वतंत्रता संग्राम का मुख्यालय भी था, अपनी गतिविधियां से और यह कहावत परिहाय होती है कि पूत के पाव पालने में ही दिखाई देती है। जब वह आठ साल की थी एक दिन माम का देखा कि वह घर की रेलिंग पकड़ खड़ी थी। एक हाथ से मजबूती से उसने खम्भा पकड़ रखा था, दूसरा ऊंचा उठाया था। मैंने पूछा "बोलो तो सही, तुम कर क्या कर रही हो" इस पर अपने वह काले बाला से धिरे चेहरे से मुझे गौर से देखते हुए कहा "जाव-आफ-आक बनने की प्रैक्टिस कर रही हो" मैं अभी अभी उसके बारे में पढ़ रही थी। एक दिन मैं भी इस देश के लोगो, अपने देश के लोगो को साथ लेकर चलूंगी जिस तरह जाव आक आक आग बढ़ी थी। उनके बालमन में युग चेतना व दशभक्ति के रंग भरे। उनकी बुधा कृष्णा हठीसिंह ने अपनी पुस्तक "हम नेहरू" में एक प्रसंग का उल्लेख किया है जो उनकी आकांक्षा का प्रतीक है।

नौ बप की आयु में इटाली की स्विट्जरलैंड में वेल्स स्थित लाईडी हेमरीकन के विद्यालय में पढ़ने विराग भेजी गई। एमा लगता है महात्वाकांक्षा और जीवन के लक्षण उगा वचन में ही प्रकट होने लगे थे। इसका प्रमाण श्री जवाहरलाल नेहरू की पुस्तक 'पश्चिम आफ वर्ल्ड हिस्ट्री (Glimpses of world History) में मिलता है जो उन्होंने नैनी जेल से 1930 में इंदिरा त्रिपाठी के नाम लिखी थी।" तथा तुम्हें याद है कि तुमने पहले-पहले 'जाँव ऑफ मान' की कहानी पढ़ी थी तो तुम कितनी मुग्ध हो गई थी और तुम्हारे दिल में कितना होमना था। कि तुम भी उसी तरह कुछ काम करो। मायारण मर्दों औरना में ग्राम तोर पर साहस की ऐसी भावना नहीं होती है। महान् नेताओं में कुछ ऐसी ताते होती है जो सारी जाति के लोगों में नाम पदा कर देती है।" नौ बप की आयु वाली इंदिरा के विषय में स्विट्जरलैंड के वेल्स स्थित स्कूल के प्रिंसिपल श्री हेमरीकन (जिनके स्वयं के नाम से ही यह विद्यालय चल रहा है) ने लिखा है। "भारत की एक नहीं सी लडकी इंदिरा हमारे स्कूल में आई है। एक अनाथे देश की सौगात के रूप में उसका बड़ी गमजोशी से स्वागत हुआ। यह देश स्वतंत्र नहीं था और शीघ्र ही हम उसे स्वतंत्र कराने की इंदिरा की प्रचर कामना में सहगामी हो गए।" हेमरीकन की यह प्रतिक्रिया सूचित करती है कि बालिका इंदु के मन में प्रारम्भ से ही वह अटूट देग पेम मरा था और विरासत में ही मिली थी, देश की स्वतंत्र और उन्नतिशील देखने की कामना। उनकी बिलक्षण प्रतिभा और व्यक्तित्व की छाप हेमरीकन द्वारा उनसे चित्रण में मिलनी है। वह लिखते हैं "इतनी छोटी उम्र में ही अपने पर नियंत्रण रखना और परिस्थितियों का चर्चित हुए बिना सामना करना उन्होंने सीख लिया था। वह अपनी मोहक मुस्कान के साथ हर एक का स्वागत करती। सहपाठिनियों में वह लोक प्रिय थी अत्यापका या उस पर गहरा स्नेह था।" उस समय भी देश की स्वतंत्र कराने की उनकी डटकर इच्छा थी। उनके माता-पिता, उगा पूरा परिवार इस पक्ष में लगा था और स्वाधीनता के लिए किसी भी बलिदान को बला नहीं मान रटा था।

उस समय का राजनीतिज्ञ बातावरण यह स्वीटजरलैण्ड जानर भी नहीं भूल पाई । विदग म भी ' यह प्राय गांधी का नाम लेती । हम उनके बारे में सब कुछ जानना चाहते थे । यथाकि हमन यह तस्वीर देखी थी जिसमें यह गांधी जो के साथ खड़ी हैं । उ हान हम बतया कि गांधी न जान की जोगिम उठाकर उपयाम किया और सिद्ध किया कि अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति नफरत और ईर्ष्या से किस तरह ज्यादा होती है ।"

बापू के लिए जिनासा उत्तरन कराने या उनका उद्देश्य पूरा हुआ और हमरीबन लिखते हैं हम उनके बारे में जानना चाहते थे और यह दिन भी आ गया । इन्दिरा अपने दस लोट रही थी और हम उह छोटे-छोटे उणहार भजना चाहत थे गांधीजी भी भारत लौट रहे थे । वेल्स के स्टेशन पर उनकी गाडी योडी के देर लिए ठहरी तो हम अमिवादन का अवसर मिला । सब बच्चा के हाथों में इन्दिरा के लिए छोटे-छोटे पासल देखकर वे मुस्कराए । इन्दिरा नेहहा म थी जी और समूची दुनिया के बीच एक कडी का काम किया है जो हमेगा बायम रहेगा ।"

सन् 1927 के अत में इन्दिरा जी स्वीटजरलैण्ड से भारत लौटी और अगली गर्मिया में उनके पिता न उह पत्र लिखने प्रारम्भ किए जो पिता के पत्र पुत्री के नाम दीपक से पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुए । इन्दिराजी की नियमित शिक्षा गांधी जी की सलाह पर पूना के Pupils Own School में हुई जहां से उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की । 1927-29 दो वर्ष सघन राजनतिक गतिविधियां और युग निर्माण घटनाक्रम के थे । इस बीच प० जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस अध्यक्ष बने । लाहौर अधिवेशन में उनके नेतृत्व में स्वतंत्रता का संकल्प लिया गया । 1930 के 14 नवम्बर को जवाहर जयन्ती समूचे देश में धुमधाम से मनाई गई । 13 वर्षीय इन्दिरा एक दिन पार्टी के कार्यालय में जा पहुँची और वाली 'मुझे भी कांग्रेस का सदस्य बनाएँ ।' लोग हस पड़े, वाले "तुम अभी बहुत छोटी हो । थोड़ी बड़ी हो जाओ तब हम तुम्हें सदस्य बनाएंगे ।" इन्दिरा जी की बात अच्छी

नही बोली "क्यों, जितना काम दूसरे वालिग्टयर करते है उतना तो मैं भी कर लूगी।" उनके उत्साह को देखकर वह बैठे लागा की हँसी थम गई। किन्तु हमारा नियम है कि हम 21 वष से पहले किसी को अपना सदस्य नहीं बनाते।" इन्दिरा जी को यह बात अच्छी नहीं लगी।" मातभूमि की रक्षा व सेवा के लिए आजादी के लिए लडने को हर किसी को अवसर मिलना चाहिए।" जान आफ आक' का अपना आदश मानने वाली बहन की आत्मा कायर नहीं बनना चाहती थी" मैं अपनी वाप्रेस स्वय बनाऊंगी।" इन्दिरा न माँ से पूछा था इसको क्या नाम दू। "वानर सेना" माँ न उत्तर दिया। एक बार तो इन्दिरा जी ने इसे ध्यगात्मक समझा किन्तु माँ कमला ने समझा दिया "जैसे बन्दरो ने लका को जीतने मे राम की मदद की और रावण को माग, ऐसे ही तुम बापू की मदद करना।" पुलिस की बाहर भीतर की हलचल को नताओ तक व नेताओ की सरगमियो वा उनके क्रातिकारी साथियो तक पहुचाने का काम इन्दु व उसकी वानर सेना ने अपने ऊपर लिया। स्वय वह कहती है "वानर सेना का नाम वा पुष्यो वा वयस्को वा काम हल्का करा जाये राष्ट्रीय झण्डा सीना, उह सूताना, लागो के लिए खाना बनाना, बँठका और रँलियो के घेराव, पानी पिलाना, जो बँगी लिखना नहीं जानते उनको ओर से चिट्ठियाँ लिखना और पुलिस लाठी चाज मे धायल हुए कांग्रेस सेवादल के स्वयं सेवको को प्राथमिक चिकित्सा करना।" (जीवन के कुछ पृष्ठ स) "बाद मे हमने सत्नाग्रह जैसे आन्दोलनो मे भी भाग लिया। "मुझे अपने पिता के कांग्रेसीअध्यक्ष पद पर पडुचने की अच्छी तरह से याद है। अधिवेशन मे 'पूर्ण स्वराज्य' के लक्ष्य की घोषणा की जाती थी उस प्रस्ताव का मसविदा मेरे पिता ने तैयार किया था। टाइप होने के बाद मैं उसे पढकर वोटर से अपने पिता को सुना रही थी। बाद मे पिता ने कहा "अब तुम इसे पढ चुकी हो इसलिए इससे वचन बद भी हो गई हो।"



2 फरवरी, 1931 को उरुग्र प्रपन प्रिय दादा से सदा के लिए  
 विछुटा पड़ा। प्रेत में वह अपना माता पिता के साथ थी लवा यात्रा  
 पर गई। वहाँ ग लौटी ता गांधी जी की सलाह पर माध्यमिक शिक्षा या  
 सिलसिला फिर चला पड़े तो पूजा के Pupils Own School में फिर  
 बम्बई में 1 जून 1934 में वह उच्च शिक्षा के लिए गुरुदेव टैगोर के शान्ति  
 निकेतन में प्रवेश लेकर गुरुदेव नटार के सानिध्य में आई। गुरुदेव न  
 काम देना साथ की पत्र, अनुमान के प्रति आस्था और उहने  
 भविष्यवाणी की यह वाक्यांश असाधारण है और उसमें सनत्वा को जीने  
 की आदत है। "सभी छात्राया का उनी प्रवेश पर स्वाभाविक उत्सुकता  
 हरे हमें बातचीत करती बड़ी ही शान बहुत ही साम्य सादी के कपडा मे  
 तिपटी।" यह क्या ? यही इतिहास नहक है 'बाश्मीरी राजा' मोतीलाल  
 की पातो इन ही सीधी सादी ? गौरा की तरह ही शारीरिक श्रम करके  
 आश्रम के नियमों का पूरी तरह पालन गंगीपुरी दृश्य गुरु आज्ञा से  
 सीखना, मृदु व्यवहार। यही कारण है कि जब रण माता कमला के  
 इलाज के कारण उह गति निकेतन से विद्या लेकर विदेश जाना पडा  
 तो विद्या के समय गुरुदेव न नेहक जी को तेल में लिखा 'हमने नारी  
 हृदय से इतिहास को विद्या दी। उसने समस्त शिष्य एक स्वर में उसकी  
 प्रशंसा करते और में जाना है कि वह छात्रों में बहुत लोकप्रिय है।  
 वह बड़ी मनमोहक व लिखा है जा प्राये सहपाठियों व शिक्षकों में एक  
 सुवन्द स्मृति छोड़ गई है।

इस प्रकार जंगल काल में इंडु प्रियदर्शिनी के समक्ष था स्वतंत्रता  
 संग्राम में विचारा राष्ट्रीय चरित्र, महान् दान्य महान् पिता, हज्ज  
 किंतु विदुशी माना, रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे गुरु द्वारा देगे के लिए आत्मो  
 त्याग व लगातार जेता में जाने रहना व महत्त्वा गौरी जैसे सत्ता का  
 मादतान। बनपा में पगारी बंटी इंडु का पिता का सानिध्य कम, जेत

से लिये गए पत्र अधिन मिला करते थे जो उसने लिए जीवन का दशन बन कर रह गए। महात्मा गांधी ने उन पत्रों के विषय में टिप्पणी करते हुए नेहरू जी ने लिखा था। 'तुम्हारे पत्र बहुत अच्छे हैं। वास्तव में तुम द्वितीय मंत्रि मन्त्र। तुम्हारा विषय निराला विद्वान् पुराने ढंग का है। मानव का प्रादि एक विवादास्पद विषय है। धर्म का अर्थ और भी विवादास्पद मामला। परंतु इस मन्त्रमन्त्र से तुम्हारे पत्रों का मूल्य घट नहीं जाता उनका महत्त्व तुम्हारे निष्ठाओं की सच्चाई में नहीं परंतु निष्ठाओं का ढंग मन्त्रकार इस तथ्य में है कि तुम इनके हृदय तक पहुँचाने और उसने पान की अर्थ से साधन की कोशिश की है।' शांतिनिश्चिन्ता की शिक्षा की छाप उनका व्यक्तित्व पर अस्तिम समय तक रही। आराम का कुछ मात्र विषय मन्त्रकार रखा करा, ए नही मोर प्राथना। विषय छाप न जेनो करा भय।" अर्थात् मरी यह प्राथना गही कि विपत्ति से मेरी रक्षा करो, मुझे योग्य परो कि विपत्ति से मैं कभी डरू नही। मही उनका जीवन का गुस्मन्त्र रखा।

28 फरवरी, 1936 स्वीटजरलैंड के लो लोगान सेनेटोरियम में माता कमला ने अस्तिम सांस ली। अवेली पडी इदिरा फिर दक्षिणी पूर्वी अणिया का दशो की यात्रा के लिए पिता के साथ निवृत्त पडी। 1937 में वे इंग्लैंड पहुँचे और यहाँ आरसकोड के समरविले कॉलेज में प्रवेश लि। किन्तु अस्तिम में एक स्थान पर रहकर पढाई पूर्ण करनी लिखा नहीं था। दादी स्वरूप की मृत्यु के साल भर बाद ही उन्होंने आरसकोड छोड़ दिया और अपने पिता के साथ चैकोस्वाकिया की यात्रा करके वापस पुन भारत लौट आई।

26 मार्च, 1942 को उनका विवाह विरोज गांधी के साथ हुआ। उसी वर्ष 16, सितम्बर को "भारत छोड़ो" आन्दोलन के अनगन उह जल जाग पडा। 13 मई को नद नो जेल से छूट। 12 अगस्त 1946 को उनको बुध्या टूरिंग हरीसिट के घर बम्बई में राजीव का ज म

हुमा । 14 सितम्बर, 1946 को सजय का जन्म हुमा । 1947 की मई में इंदिरा जी परिवार सहित देहली आई । देश की स्वतंत्रता मिली, कई महापुरुषों के अथक परिश्रम से प्रयत्न से । नेहरू परिवार ने तो अपना सबस्व ही होम कर दिया था इस दिन के लिए । उठे जोश व उल्लास से भाजादों की भगवानी हुई परन्तु गीम ही मधुर स्वर से सम्मोहन गिरेरता सितार का तार अप्रत्यागित स्वर से टूट गया । अथसाद सम्पूर्ण देश में छा गया । पाकिस्तान बनने पर नर सहार और साम्प्रदायिकता का वैताविराध घृणित वातावरण और तत्परचात महात्मा गांधी की इत्या । अनेकानेक समस्याएँ जो कि उस समय स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री होने के नाते श्री नेहरू के सम्मुख आई । माता-पिता, सहचरी व गुरु सबको सोचकर नेहरू अकेले पड गए और फिर प्रधानमंत्री पद की अत्यंत व्यस्तता और दायित्व इन्दिरा जी को उस समय दोहरी भूमिका निभानी पडी पत्नी व पुत्री दोनों की । 1953 में वह रानी एलीजाबेथ द्वितीय के राज्याभिवेक समारोह में पिता की सहचारी बन कर गई और सोवियत संघ व स्वेण्डीनेविया देशों की यात्रा की । दो वय बाद वह कांग्रेस काय समिति की सदस्या निर्वाचित हुई और सक्रिय राजनीति में व्यस्त हो गई । हिन्देशिया में हुई बांडुग सम्मेलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उसी वष कांग्रेस की केन्द्रीय निर्वाचन समिति की सदस्या बनी ।

1958 में कांग्रेस केन्द्रीय संसदीय मण्डल ने उन्हें अपना सल्लय चुना और उसी साल गामियों में अन्तर्राष्ट्रीय बाल कल्याण सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता के रूप में शामिल हुई । फरवरी 1959 में कांग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद वह समूचे देश का आरूपण बिन्दु बन गई बिन्दु सल्ल भर बाद वह पद त्याग दिया । जनवरी 1960 में उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष पद से अलग होने की इच्छा प्रकट की । पयवेक्षकों का यह कहना है कि पति का बिगडता स्वास्थ्य ही शायद इसका मुख्य कारण रहा हो 18 सितम्बर, 1960 को वह अपना पति छोड़ दी थी । उसी

वप पेरिस में यूनेस्को की अधिशासी मण्डल की सदस्या बनी । फिर आया 1962 का चीन-भारत युद्ध । उनकी एक विनटतम् मित्र ने उस समय के उनके चित्त व वस्तुत्व का एक चित्र खीचा है इन शब्दा म बाँकश्ला गिर चुका था । तेजपुर खाली हो रहा था । मैं एक दिन तीनमूर्ति भवन पहुची तो वह जिद करे बैठी थी कि वे तेजपुर जाकर भारतीय सैनिको का होसला बढ़ाएगी । पण्डित जी इससे बहुत खुश नहीं थे उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उनकी बहा के खतरों से आगाह कराऊँ और जान स रोकू । पर वह मानो नहीं और गई । उनकी उपस्थिति से सचमुच वहाँ स्थित लोगों को होसला मिला । वे चीन-भारत युद्ध में नागरिक सुरक्षा समिति की अध्यक्षता बनी । और उसके नतृत्व में युद्ध पीणितो और पुन-वास के कार्यक्रमो को नये आयाम मिले ।

इस बीच नेहरू जी के मन में अपनी बंटी के प्रति स्नेह के साथ सम्मान का भाव भी पैदा हो गया था क्योंकि उसने कांग्रेस अध्यक्ष के उत्तरदायित्व भी बड़ी सूवी से निभाए थे । 19 1 के मध्य में श्रीमती गांधी ने नव स्वतंत्र अफ्रीकी राज्यों की यात्रा के दौरान जोम्बो के मिल्टन ओचारे और व्यूलिस यूरे जैसे सरकार के प्रधानों से भेंट की । नेहरू जी साथ उहाने केनडी से भेंट की और इन भेंटों में श्रीमती गांधी की भूमिका देखकर अब नेहरू उनकी राय को सम्मान देने लगे थे ।

इंदिराजी प० नेहरू से राजनीति के दावपेच सीखे । उस समय भी वह उन पदनेताओं में से सम्झी जाने लगी जो नेहरू के बाद पद सम्भालने योग्य थी । अमेरिकी लेखक वेल्स हेलन ने अपनी अंग्रेजी में लिखी पुस्तक 'नेहरू के बाद कौन ?' में जिन आठ राजनेताओं की भविष्य की चर्चा की थी उनमें से एक वह भी थी । उस समय तक इंदिरा जी अपने पत्त दिखाने व अपनी चाल चल ? में माहिर हो चुकी थी ।

अप्रैल 1964 में यूयॉक में आयोजित भारतीय मेले की वह अध्यक्षता बनी । उनकी घनिष्ट मित्र पुपुल जयधर का कथन है कि 'इन

मया "गुग्गुलू" से सीटी की उन्नाइ य गव न गी गी । "उगी य  
मई ते प्रतिम मयाइ मयाइ 27 मई 1954 का गवता ती प्रयाग नी  
श्री जयाहरनाय सिंह का निधन हुआ । तेरफ म साय एव गुग का  
मत हुआ । श्री सायबहादुर नाम से तो प्रयाग नी यने श्रीर उना  
भाइर पर इदरा जी म नीरक म नामित हुं श्रीर उना । गुग्गुलू  
श्रीर प्रयाग विभाग मयाता । गीरिस्तान क इउर य क्षात्र ममभाइ  
के बा म मारी जी का प्रकस्तान निरत हा मया गण नेता क म म  
इदरा जी का नाम प्रस्थापित हुआ इरामि त म मार फिर ती म न  
सकट उपस्थित हुआ । उग समय ये परते श्रीर उना मयाग म  
विस्तार नी मोरारजी दगाई य इइम नी गुग्गुलूरी म म म म म म  
पवन करने का म्याय के इत क र रह थ मुड़े नेता का गुट (Syndicate)  
गुगर जी के मुताबले त दा के धो की पीठ धनयता रह थ । 1967 क  
घाम चुनाव भी मधीय के श्रीर गांधी-नेइरु क पवित्र नाम की भाव-  
यता (कांग्रेस को घोट प्राप्त करने के लिए) थी । मयारा ने उछला  
कि नदा श्रीमती गांधी का समर्थन प्राप्त कर रहे है बा श्रीमती गांधी ही  
क्यो नही ? सिण्डीकेट श्रीमती इदरा गांधी को धाय सान म म म म म  
हुमा मगर इग त पर कि मोरार जी उय प्रधानमन्त्री रह्य जो कि  
वास्तव म एव नया ही पद था । उका विचार था कि इदरा जी  
कमजोर प्रधानमन्त्री साजित हागी श्रीर नाम उनका श्रीर शासन सिण्डी-  
केट का होगा । 'गुगी गुडिया' का नाम भी इदरा जी को दिया गया ।

उस समय कांग्रेस के अपेक्षाकृत युवा तुकों को एक नई  
शक्ति व स्फूर्ति का अनुभव हुआ और 1967 के चुनाव म दो परिणाम  
सम्मुख आए । एक तो यह सिद्ध हो गया कि सारे देश की जनता का  
हृदय नेहरू के पदचात यदि कोई जीतने वाला कांग्रेसी नेता है तो वह  
इदरा गांधी ही है । दूसरे कामराज, अतुल्य घोष और एस०बे० परिहार  
जसे लिंगजो की हार से स्पष्ट हो गया कि चाहे कांग्रेस सगठन पर यह  
रोग कितने ही हावी हो, जनता से उनकी पकड़ क प्रभाव कम हो गया है ।

इन चुनावों में लोकसभा की 525 सीटों में कांग्रेस को कुल 279 सीटें मिली। (जबकि पहले 369 सीटें)। माऊ राज्या में बहुमत नहीं मिला। किन्तु अब इतिरा जी "गू गी गुडिया" बनी रह गई थी। डॉ लोहिया ने पहले उनको यह नाम दिया था। मोरारजी को उप-प्रधानमंत्री तो बनाया गया किन्तु यह मंत्रालय नहीं दिया गया। सिण्डीकेट के इच्छा विरुद्ध डा, राधाकृष्ण को दूसरा वायफाल नहीं दिया गया। मोरारजी ने समयन किया किन्तु वह प्रगतिशील नीतिया से प्रतिबद्ध पभी नहीं थी। नहए समभौतेवादी थे किन्तु इतिरा जी व्यवहारिक थी। नेहए के समाज विचारक होने के कारण वह उस समय पश्चिम की भाषिक नीतियों से चकाचौप रही और धमरोवा द्वारा नियन्त्रित विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राबोध की सलाह पर रु का 572 अमूल्यन कर बँठी। फलस्वरूप आने वाले चुनावों में कांग्रेस को गहरा धक्का लगा कारण यह था कि महंगाई म तजी से दृढ़ होने लगी और मध्यम वर्ग का जीवन निर्वाह कठिन हो गया। कामराज न इतना विरोध पहले ही किया था किन्तु इस विषय में इतिरा जी ने कांग्रेस हाई कमान से कोई विचार विमर्ग नहीं किया था। कामराज के युवा युग और समाजवादा कहलाने वाले तत्क जैसे चन्द्र नेखर, निनेशसिंह रघुनाथ रेडडी, के धार गणेश, चन्द्रजीत यादव पहले से ही कामपथी दिशा की ओर मोड़ देने की भाग कर रहे थे। इतिरा यात्री ने इन सभी को मोरारजी और दक्षिण पथी नेताओं के खिलाफ प्रयोग किया और यही से उनकी कामपथी और घोषित पीडित वर्ग के हितों के रूप में छवि उभरने लगी।

इतिरा जी जनवरी, 1956 में प्रधानमंत्री बनी और उन्होंने 31 अक्टूबर, 1984 को अंतिम सांस लेने तक देश की बागडोर सम्भाली। इस अवधि में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जीवन में सुनौतिया का सामना करती रही। दो दशक तक चने "इतिरा युग" की उपलब्धियों की कहानी बहुत जानी मानी है। इस समय अधिक दोहराना उचित

गहरी । प्रसिद्ध लेखिका दिवंगता के साहस्य म 'नागरी के लिए स्वतंत्रता का  
 का पत्र प्रकाशित कटकाकीए रहता है । किन्तु मपसगा म बंदका को रोनी  
 इन्दिरा जो स्वयं हा ग्याति क हिरण्यमयम तु आगत पर आगीन नरी हृद  
 दन को भी उ ह्या उमी आगत पर आगीन कर दिया ।' श्रीमती  
 गांधी की बहानी भारत की लगी गरी की बहानी है जा भीतर म एक  
 दम बनती, दु गी, दूटी घोर नवमीत को लेखा उतर त यह एक संभव,  
 शक्ति, सम्मान और मायता से चिपटी की कि दुस्मा भी उनका सामना  
 करने म सकोष करत थ और मित्र एव परिचित तब सामान्य जन उन पर  
 'घोषावर हो जात थ ।'

## नारी के रूप में

नारी के रूप में इंदिरा गांधी सदा ही चर्चित रही हैं। इस प्रतिचर्चा के फलस्वरूप कभी उन्हें "सिंहवाहिनी दुर्गा" की सजा दी गई तो कभी ईप्सालु वाली की। कभी उन्हें विश्व की महानतम 'महिला राजनीतिज्ञ' बताया गया तो कभी एक ग्रहवादी ठानाशाह। स्वयं अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व या अपने उठाए श्रमों को लेकर न तो कभी उन्होंने सफाई पत्र की और न ही दावे। आज की स्थिति ने इंदिरा जी को एक नारी के रूप में स्मरण करने पर उनके व्यक्तित्व का जो पहलु सबसे पहले स्मरण हो आता है वह है उनका निर्भीक व जुझारपन। इस प्रकार की निर्मिकता कई बार तीखी एवं निमग्न प्रतीत होती थी। कई अवसर आए जब पत्रकार जगत, बुद्धिजीवियों और देश के पढ़े-लिखे मध्यम लोगोंने खुलकर उत्तेजनापूर्वक उनकी नीतियों की निंदा की पर विडम्बना यही थी कि इसी वय की एक महिला कहते-कहते फफक पड़ी थी "वह तो हमारी सब की मां थी, हम तो अनाथ महसूस कर रही हैं।" देश के अधिक पढ़े-लिखे और तक बुद्धिजीवियों को भले ही इस अनाथ स्त्री की वेदना अत्यधिक भावुक लगे परंतु उसके मुह से उस समय देश की वे लाखों करोड़ों औरतों भी बोल रही थी जिन्हें अपनी स्त्री होने का एकमात्र गर्व हो यही था कि "इंदिरा जी की मानसिकता बुनियादी तौर पर एक हिंदु स्त्री की थी। वह स्त्री जो परिवार को मर्यादा और इज्जन का



लेकर मर मिटने का हीसला रापती हैं। उनका राष्ट्र ही उनका परिवार था। "यह कथन है हिन्दी के वरिष्ठ कवि एवं पत्रकार तथा लेखक साहब श्रीबालन वर्मा का जो विद्यने 30 वर्षों से इन्दिरा गांधी के सम्पर्क में रहे थे। उन्होंने प्रमुख और विचारणीय महिलाओं की प्रतिष्ठित पत्रिका "वामा" का इण्टरव्यू देते हुए कहा, "अपनी पुत्र वधु मारवा गांधी से सम्बन्ध विच्छेद उह इसलिए अधिक कष्टप्रद लगा था कि इससे और विच्छेद के बाद के उनका परिवार की मर्यादा सावजनिक तौर से लुप्त हुई थी उह अपनी पुत्र वधु की स्वतंत्रता पर कठई आपत्ति नहीं थी उन तरीक पर आपत्ति थी जिससे वह एक सावजनिक हो-हूले के माय परिवार से अलग हो गई। यही बात राष्ट्र के माय भी थी।

बड़े कुल में जमीन विदेश में शिक्षण प्राप्त करती हुई देश की बागडार संभालने में भी वह कभी नहीं झुकी कि मूलतः वह नारी हैं प्रतिष्ठित लेखिका मृणाल पाण्डे का कथन है, 'जहां श्रीमती गांधी ने अपने स्त्री होंगे को एक बोझ की तरह नहीं बल्कि एक महज स्थिति की तरह स्वीकार किया। वही बिन्दु उनकी ताकत की शुरुआत है। उनसे पहली बार मिलने वाले लगभग हर व्यक्ति की यह प्रतिक्रिया होती थी कि इतनी शक्तिशाली और सत्तावान कही जाने वाली इस महिला का व्यक्तित्व देखने में कितना नारीत्वपूर्ण और कितना कोमल था। "वे इसे एक तरह से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्त्री शक्ति की एक बहुत बड़ी नोंति समझती है। इन्दिरा जी स्वयं के सम्बन्ध में एक कथन है, 'इन्दिरा गांधी एक औरत का नाम नहीं बल्कि यह आम जनता की सेवा में जुड़े हुए दान का नाम है। "अपनी हत्या के एक दिन पहले मुंबई में भाग देकर हुए कहा, 'मैं देश सेवा में मर भी गई तो इस पर मुझे गव होगा। मेरे रक्त की हर एक बूंद देश के विकास में योगदान देगी और उससे देश सशक्त और गतिशील बनेगा।' यह जानती थी कि देश में उनके घाट के प्यासे अपनी-अपनी घात में ह। देश और विदेशी पत्रकार इसमें जुटे हुए हैं। अपने पिता से प्राप्त पत्रों में उन्हें यह निष्ठा मिली थी।' भय बुरी चीज है

और तुम्हारे नायक नहीं। बहादुर बनो और तब सब काम बन जायेंगे।  
 सचमुच वह भगर निडरता से काम नहीं लेनी तो मर्ने की इस दुनिया में  
 वह भयैनी सफा सत्ता कायम नहीं कर सकती थी। आज स्मरण हो  
 आता है उनके जन्म के समय का एक संस्मरण। उनकी दादी स्वरूपरानी  
 ने सफासोस जाहिर किया कि उनके पुत्र जवाहर को पुत्री प्राप्त हुई है तब  
 मोतीलाल जी ने उन्हें गम हाया था कि 'देखना जवाहर की बेटा हजारा  
 बेटो से भी बढकर साबित होगी।' वह हजारी ही नहीं परोडो भारत पुत्रा  
 स देहतर साबित हुई। यह सत्य एक ध्यग एक मजाक के रूप में प्रकृत  
 व्यक्त होता था कि श्रीमती गांधी के म श्रीमण्डल में एक ही मद्र और वह  
 है स्वयं स्मरण हो आता है इन्दिरा जी का मर्तिवत्व व प्रधानमन्त्रीत्व  
 काल। स्त्री का भारतीय समाज में कोई स्वयं अस्तित्व नहीं। वह किसी  
 की बटी, किसी की पत्नी व किसी की मां दादी बहलाती है और इसी रूप  
 में अविश्व पहचानी जाती है। उसी प्रकार नेहरू जी की मृत्युपरांत जब  
 वह सालबहादुर दास्त्री मन्त्रीमण्डल में सूचना व प्रसारण मन्त्री के रूप  
 शामिल हुई तो यह 'नेहरू की बेटा' के रूप में ही जानी जाती थी।  
 उनका स्वतंत्र व्यक्तित्व बन रहा था किन्तु उनके प्रधानमन्त्री बनने तक  
 भी नेहरू की बेटा का रूप व आचरण ही जनमानस के हृदय पटल पर  
 धामा रहा। उनके प्रधानमन्त्रीत्व काल में महिलाएँ बहुत गौरवावित  
 अनुभव करती थी किन्तु व्यग्यात्मक भाषा में महिलाओं को अक्षर सुनना  
 पडता था "इन्दिरा गांधी का राज है।" इस व्यग के पुरुषों का अहम् भले  
 ही बोल रहा हो किन्तु इस तथ्य को कोई भी नहीं नकार सकता कि  
 इन्दिरा जी वह महिला थी जो लग-लग 16 वर्ष तक न केवल प्रधानमन्त्री  
 रही किन्तु जनमानस के हृदय पटल पर भी एक राज्य करती रही।

'She is the only man in India' यह वाक्य प्रातः काल  
 कहा और सुना जाना था और श्रीमतीगांधी के पौरुषोचित्व गुणा  
 को स्वीकारा जाता था। उनके आत्म विश्वास के साथ बढत  
 कदम, पनी दृष्टि व स्फुटि को स्पष्ट देखा जा सकता था।

उाने सामने सडे होर लम्बे-लम्बे पुरुष भी स्वय को बीना अनुभव करारा था । उनही राजनतिक, नूटनीतिज्ञ विचारधारा व मूढनूढ कुछ अधीनता लिए हुई थी । चाहे उनकी विचारधारा व वृत्तित्व स हर कोई सहमत नहीं होता था किन्तु उनके व्यक्तित्व म कई ऐसे गुण थे जिहें आत्मघात करने वा हर कोई प्रयत्न करता था । उनके कटटर से कटटर आलोचक भी उनके व्यक्तित्व प्रतिभा के कायल थे और इस वात पर सहमत थे कि उन्होंने देश को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र पर ऊचा उठाया है ।

उनसे पहली बार मिलने पर प्रत्येक व्यक्ति को पहली प्रतिक्रिया होती थी कि इतनी शक्तिशाली व सत्तावान कही जाने वाली महिला का व्यक्तित्व कितना महत्वपूर्ण व कोमल था । लेखिका को स्वय ही यह प्रतिक्रिया थी जब वह अगस्त, 1981 मे एन आई सी पी ए के एक सम्मलन म देहली गई थी जिसमे सम्पूर्ण भारत के लगभग सभी प्रातों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे । सभी शिक्षा विभाग मे उपनिदेशक के स्तर के थे न सभी प्रतिभागियो चण्डीगढ, आगरा व अन्य दशनीय स्थानो के पयटन के स्थान पर एन आई पी ए, अधिकाारियो से यह माग की थी । कि इंदिरा जी के निवास स्थान पर उनसे समय माग कर मॅट करना चाहते हैं । मेरी आखो के सामन आज भी वह अविस्मरणीय दिवस आ जाता है । दूर से देखने का अवसर तो बहुत बार प्राप्त हुआ था । दो बार तो वह बीकानेर ही पधारी थी । टी वी पर ता प्रतिदिन ही उनके दशन होते थे किन्तु इतने समीप से उनसे हाथ मिलाने स लेकर वातचीत करने का अवसर उसी दिन प्राप्त हुआ । सफदरगज मे अपने भावास से, हाथ मे छतरी लिए हुआ भीध्रता से चलता हुरा उनका वह सत्य व्यक्तित्व क्षण भर मे ही आखा के सम्मुख दीक्षित हो जाता है अब तो यह दृश्य मुझे और भी याद आता है । कस थे यह दूर हत्वारे, जिहाने रक्षक होते भी भक्षक बनने का यही अवसर ढूढ निकाला ।

'नारी के कई रूप हैं—बेटी, पत्नी, माँ और बहिन आदि आदि।  
 हर रूप में इन्दिरा जी अपनी विलक्षण प्रतिभा व अनोखापन लिए हुए  
 थी। विश्लेषण करते हुए उनका सब प्रथम 'बेटी का रूप' ही एक ऐसी  
 विलक्षण बेटी के रूप में, प्रतिबिम्बित होता है जिसे पं. नेहरू की बेटी के  
 रूप में, अधिक जाना जाता रहा है "कमला नेहरू की बेटी" बेटी के रूप  
 में कम। किन्तु अपनी माँ से भी वह न्यायिता द्वारा दिए हुए थोड़े से  
 समय में सीख पाई। एक पत्रकार से हुई बातचीत में उन्होंने अपनी माँ के  
 बारे में याद करते हुए कहा था "मैंने उन्हें चोट खाते देखा था इसीलिए  
 निश्चय किया था कि जिन्दगी में कभी चोट नहीं खाऊंगी।" 19 नवम्बर,  
 1917 जब रूस में जनजाति का समय था, कमजोर और लाजवन्ती  
 कमला के एक लकी पैदा हुई जिसे दादा मोतीलाल नेहरू अपनी माता  
 इन्दिरा के नाम से पुकारना चाहते थे और माँ कमला ने नाम रखा  
 'प्रियदर्शिनी' बाद में समझौते के रूप में 'इन्दिरा प्रियदर्शिनी' चल निकला।  
 मोतीलाल नेहरू की माँ बड़ी दया औरत थी जिससे वह स्वयं भी दुबके-  
 दुबके रहते थे। यही गुण शायद इन्दिरा को विरासत में मिले। भारत की  
 इन्दिरा को देखते हुए भारत कोकिला सरोजिनी नायडू ने कहा था "मैंने  
 इतनी स्वाभिमानी देखी नहीं देखी।

बचपन के कड़वे अनुभव—परम्परागत व्यवस्था बालिका इन्दिरा को किसी  
 और ही सत्कार की और इंगित कर रहा था किन्तु चतुर्दिक का राजनीतिक  
 वातावरण उसे कठोर सघट्ट की और घसीट रहा था। जवाहरलाल गांधी  
 जी से प्रभावित थे किन्तु अभी मोतीलाल नेहरू अछुते थे। संयोग की बात  
 है एक बार गांधी जी आनन्द भवन पधारे और इसके बाद ही आनन्दभवन  
 की हवा ही बदल गई। मोतीलाल जी ही कांग्रेसी नहीं बन गए अपितु  
 आनन्द भवन ही राष्ट्रीय गतिविधियों का केन्द्र बन गया। तब इन्दिरा जी  
 केवल 3-4 वर्ष की थी। वह बातें समझ तो नहीं पाती थी किन्तु उनके मन  
 पर यह घटनाएँ अमिट छाप छोड़ गई। कृष्णा हठीसिंह ने अपनी पुस्तक

मे श्री इंदिरा जी के बचपन का कुछ चित्रण किया है जो इस-वहावत को चरिताय करता है कि पूत के पाव पालने में ही दिखाई देते हैं। श्रीमती हठीसिंह लिखती हैं 'अभी कुछ महीने लड़कियाँ को एक सभा में उहाने बताया कि जिन्दगी भर जाँन आफ आँक उनकी प्रेरणामूर्ति बनी रही। यह भी उहोंने बताया कि जान आफ आँक को गिरफ्तार किया गया था व अग्नीकुंड में जलाया गया था। उहोंने कहा "देश के लिए जो अच्छा काम करना चाहते हैं उनके नसीब में यही हाता है। हमें यह तय कर लेना चाहिए कि किस चीज का महत्व हमारे लिए ज्यादा है? अगर देश का महत्व हमारे लिए और चीजाँ से अधिक है तो इसके लिए अग्नीकुंड में जलना या इससे बड़ी सजा भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए। आज उनकी हत्या के परिप्रेक्ष में यह कथन कितना महत्वपूर्ण हो गया है।

इंदिरा जी की शिक्षा में जो अव्यवस्था शुरू-शुरू में रही थी लगातार बनी रही। आधा दर्जन स्कूल बदलने व विदेश जाने पर भी वह वाक्यावदा शिक्षा ग्रहण न कर सकी।

नेहरू परिवार शायद साधारण हिंदु परिवार की तरह ही लड़कें के जन्म से ही अधिक सतुष्ट होता। यही अभाव सबको छटक रहा था इसलिए शायद इंदिरा को लड़की जैसे कपड़े पहनाकर वे लोग मातृवत्ता-निव सानवना प्राप्त करना चाहते थे। ललिता शास्त्री इन दिनों मानव भवन गईं तो उहोंने देवा कमला जी किसी लड़के को कपड़े पहना रही थी। उहोंने शास्त्री जी से पूछा 'आप तो कहते थे कि पंडित जी के कोई लड़का नहीं है' शास्त्री जी बोले "यही लड़का इंदिरा प्रियदर्शिनी है।'

लाड-प्यार और सुख वैभव की प्रचुरता के बावजूद भी प्रियदर्शिनी का अकेलापन बढ़ता ही गया। माँ की बीमारी ने इंदिरा का आनंद भवन के कमरा में ऐसा खिलौना बनने को मजबूर किया जिससे यदा-कदा धन भर कोई बच्चा खेन लेता है और दूसरी दिशा में निकल

जाता है। जब यह पाच वर्ष की थी तो उनके पिता ने अपने पिता को जल से एक पत्र लिखा था। कमला ने लिखा है कि इन्दु दिन पर दिन जिदगी हाती जा रही है और पढाई की और बिलकुल ध्यान नहीं देती है। मेरी इच्छा है कि यदि हो सके तो उसकी पढाई का कोई प्रयत्न अवश्य किया जावे।” इस बीच उम माँ से भी अलग रखने की काशिश की गई क्योंकि कमला क्षय रोग से पीड़ित थी। मोनीलाल जी ने जवाहरलाल जी को एक पत्र में लिखा ‘दिल्ली में बम्बई तरु के सफर में मैं देखा कि इन्दु कमला को बार-बार चूमती रही, यह बन्द हाना चाहिए। अगर हो सकता ऐसा करो कि वह एक दूसरे से इस तरह टिपट नहीं।

बालिका इंदिरा में देग के लिए कुछ करने की भावना थी और एमें विचार अनावधान नहीं आ गए। उनमें जो कुछ अपनी आत्मा से देखा उसी का परिणाम था कि बचपन से ही, बल्कि जन्म से ही, इंदिरा जी ने जब से होश सम्भाला भारत माता की जय” “गांधी जी की जय” नेहरू जी की जय” के साथ “इकलाव जि लावाद” के नारे सुने। वह इन नारों का अर्थ नहीं समझती थी किंतु इस तरह के नारे हजारा लोगों की मीठ लगती तो उनका मन भी उतनाह से भर जाता। आन्दोलन राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र हुआ था। दिन-रात स्वतंत्रता की चर्चा होती, बड़े-बड़े नेता आये-जाये, सम्मेलन होते लोग परछे जाते और जेल भेज दिए जाते। बालिका इन्दु का यह सपना दयकर आनन्द आता। उन्हें जूलूस में शामिल होना भी अच्छा लगता था। कभी-कभी वह अपनी गुडिया की बतार सजाकर उसका जूलूस निकालती थी और भारत माता की जय! के नारे लगाती। राजनैतिक गतिविधियाँ क्योंकि आन्दोलन भवन में केन्द्रित थी—अन बालिका इन्दु का बड़े-बड़े नेताओं (गांधी जी जैसे) के सम्पर्क में आना था, उनकी बातें सुनना और उनका सहज दुलार पाने का अवसर मिल गया। सधप का प्रथम अनुभव बालिका इन्दु का तीन वर्ष की आयु में हुआ जब उनकी बुधा की शादी थी। कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक भी इन्हीं मौकों पर की गई क्योंकि सभी विविष्ट नेताओं का

दादी में सम्मिलित होना अशक्य-भावी था। यह खर सरवार की लगी। पुलिस को आदेश हुआ कि विद्रोह को बुचल दिया जाव। मोतर गाधीजी व अन्य कांग्रेसी बडे थे। और जवाहर बाहर पुलिस से उलभ रह थे। फेरो का समय हो गया था। यह पहला भवसर था जब इन्दु की यह प्रतीत हुआ कि पुलिस ज्यादाती कर रही है। बवार ही पापू से उलभ रही है। कुछ दिनों बाद इंदिरा की कन्वी घूट और पोने की मिली। जब मोतीलाल को गिरफ्तार करने पुलिस आनन्दभवन आ टपकी। अधि कारी मवान की तलाशी लना चाहते थे। मोतीलाल जी न कहा अच्छी तरह तलाशी लोग तो पूरे छ महीने लग जायेंगे। उह जब पता चला कि वस्तुत उनकी गिरफ्तारी के वारंट लेकर ही आए हैं तो वह उनके साथ चल दिए। जवाहरलाल नहृष कांग्रेस कार्यालय से घर लीटे तो वह भी गिरफ्तार कर लिए गए। इन्दु के सामन दादू व पापू को पुलिस ले गई? इन्दु जब दोनों को मिलाने अदालत गई तो दादू ने उह लाड मे गोद म उठा लिया। इन्दु का मन भर आया। रोने की ही थी कि दादू ने समझाया 'तुम बहादुर हो ना बहादुर बच्चे रोया नहीं करते।' इन्दु घर आई तो पापा पुलिस ने आनन्द भवन को घेर रखा था। और एक एक वेश कीमती सामान बाहर फका जा रहा था। इन्दु को फान आया और उसने एक कालीन पर पैर अडाते हुए कहा खबरदार, इसे नहीं ले सकते। यह तुम्हारा नहीं, हमारा है।'

अपनी आत्म कथा मे नेहरू जी ने लिखा है कांग्रेस की नीति जुर्माना अदा न करने की थी। आय दिा पुलिस आती और थोडा बहुत फर्नीचर ले जाती। इस तरह की लगातार लूट से मरी चार वर्षीय बटी इन्दु नाराज थी और उसने पुलिस से विरोध करते हुए अपनी नाखुशी का इजहार भी किया।

यह दखकर तो इन्दु को रोना हा आ गया कि उसके मुदर लॉन को, जिस पर खेला करती थी, पुलिस के घोडा ने रौंद कर चौपट ही कर

दिया। इसके पश्चात् इन्दु को सावरमति के कार्गस अधिवेशन में भाग लेने का अवसर मिला। क्योंकि नेहरू परिवार की सभी महिलाएँ वहाँ गईं। सभी तीसरी श्रेणी में गए व गाड़ी जहाँ-जहाँ रुकती वहाँ घसट्य लोग नारे लगाने हुए मिलते 'नेहरू जी जिन्दाबाद' भारत माता की जय' इस उद्घोष से बालिका इन्दु प्रभावित हुईं व नेहरू परिवार के स्वागत व सम्मान से उन्हें अनूठी गौरव मिश्रित अनुभूति हुई। तत्पश्चात् एक घटना ने तो इन्दु को झकझोर ही दिया। नेहरू परिवार की एक महिला इन्दु के लिए विदेश व फ्रांस का एक सुंदर फ्राक ले आई-कमला नेहरू ने समझाने का प्रयत्न किया कि 'हम लोग विदेशी कपड़ा पहनते नहीं' किंतु महिला को आशा थी कि बालिका प्रलोमन में आ जावेगी-4 5 वर्ष की बालिका देशी-विदेशी क्या समझ पायेगी, किंतु बालिका के विदेशी कपड़ों के बारे में घर के बच्चे की बात को तोते की तरह दोहरा दी।

महिला ने तर्क किया 'जिस गुड़िया से तुम खेलती हो, वह भी तो विदेशी है।' दादू व बापू के जेल जाने के पश्चात् गुड़िया ही बालिका की एक मात्र साथ थी किंतु दादू और बापू भी विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार स्वरूप ही जेल गए थे। सघष करते हुए बालिका ने आनन्द भवनों की छत पर गुड़िया का दाह संस्कार कर दिया। कई दिनों तक छाना पीना बंद रहा रोई भी किंतु विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की जो भावना पुष्ट हुई उससे बालिका इन्दु को एक नई दिशा दी।

इन्दिरा जी ने स्वयं कहा "मैंने दिल को कड़ा किया और गुड़िया में आग लगा दी। मैं अपना को सम्भाल नहीं पाई और फूट फूटकर रो पड़ी। लगा जैसे आँसू कभी थमेगे ही नहीं। इस घटना के बाद मैं काफी दिन तक बीमार रही। आज भी मुझे माचिस की तीली जलाने से नफरत होती है क्योंकि वह दृश्य मेरी आँखों के सामने उभर उठता है।

उस दिन मेरा प्रिय खेल था-मैं घर के ज्यादा से ज्यादा नौकरों को ईन्टैठा कर लेती और टेबल पर खड़ी होकर भाषण देती। घर में



अक्सर ही रही यातीता के दौरान मैं कुछ वास्तु गुण रमे थे। अरु भाषण म मैं इही वास्तु को बेहरीन दृग त दाहृगती। इरिरा गधी जीवन के पुछ पृठा म।

“हमारे परिवार की एग मिन मृता गाराभाई न मुके जनावा कि जय मे 7-8 वष की थी तय मैं गृा वानन वान वधवा की एर टाली बनाई। मैंने गधी जी स पृथा वा वि धाजाने की लटाई मे म वषा योगदान दे सकती ह उहाने गृा वातने वाने दल जनाने वा मुभ व िपा था।’

अनद भवन म इरिरा की राजनतिक गिभा हुइ पी तो तीन मुति भवन उनके राजताविन प्रशिगण वा स्वन बना। प्रधानमधी भवन की परिवारिका के रूप म उह राजनीतिगा प्रीर अ व नीनि-निवारका वा निकट से देखने वा जो अक्सर मिला उसस इदिरा जी की देनी थीर विदेशी राजनीति की गतरज की गुदियवा की समभने व मुचम्ने वा भरपूर अक्सर प्राप्त हुआ। राजनिति को वह कितना समकने पाई अट तो वा के वषों म खुला किंतु दिव की पारती इरि उनकी लगानार जाचन म लगी थी अट इदिरा जी की बपी उपलधि थी न उनका सत्ता म अान ही कारगर सिद्ध हुई। राजनतिक के रूप म इदिरा का पहना रूप केवन केरल की न बूदरीपाद सरकार को बर्वास्त वरत के सदम म उनर वर सामने आया।

सबसे अच्छे उनक शि गक व उनके पिता जा वरावर पुती क पत्र लिखत रहे थीर उनक अपने अनुभव। वचन की जि भी उनमे नही छूटी। बीमार मां को इरिरा की जि थीर कमजोर स्वास्थ्य की वि ना भरते दम तक सताती रही। इसी गिद का इरिरा न जाने वागे वषों म कवक की तरह छोड लिया। कमना की मौन इरिरा का अया पिता न अधिक निकट ले आइ व इतिहास म पिता पुती के एम सयोग ने जम लिया जो अपनी अमित ध्यान इतिहास के पृठा छोड गयी।

2 फरवरी 1959 को श्रीमती गांधी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 52 वीं अधिवेशन चुनी गईं। वह नहर परिवार की तीसरी सदस्य थी और चौथी स्त्री जो इस पद पर पहुंच पाई। नेहरू ने कहा "पहले वह मेरी साथी थी, फिर सहयोगी हो गईं और अंत में मेरी नेता बन गईं।" पहला पहला काम अध्यक्ष बनना था जो उन्होंने किया कि अपने पिता को कांग्रेस की राष्ट्रीय कार्य समिति से हटा दिया। यह उड़ी सूझ-बूझ का काम था क्योंकि अले ही उनके शिवाग्र में नहर जीवन परामर्श गुरुत्व-पूरा हो इंदिरा इन शिवाग्रों के उत्तरदायित्व से प्रधानमंत्री का भ्रमण रखना चाहती थी। यह वह समय था। जब कांग्रेस मगडन में नितात अव्यवस्था आता थी जिमरी सबसे उड़ी कीमत पार्टी का केरल में अपनी पराजय से देनी पडी। प्रसिद्ध पत्रकार डी आर भनकेकर के शब्दों में "नितात अनुशासनीयता, आचार संहिता या जन आचरण के स्तर के अभाव में मतदाताओं की निष्ठा और अनुशासन की तस्वीर गिर गई थी साम्यवादियों की निष्ठा और अनुशासन की मतदाता नजर आजा न कर सके। साम्यवादियों ने केरल में मूलभूत परिवर्तन करने शुरू कर दिए थे और इन परिवर्तन का यह येन केन प्रकारण लागू करने लग गए थे। केरल में दौरे से लौटने पर श्रीमती गांधी ने अपना मत बना लिया था और जब एक पत्रकार ने नहर जी से पूछा 'क्या आप केरल सरकार को बर्खास्त करेंगे।' तो कोई भी उग्र कदम उठाने में हिचकिचाते हुए नेहरू जी ने कहा "वह भी निर्वाचित सरकार है।" इंदिरा जी पीछे से एकलम आगे आईं और तपस्वी से बोली "जी हाँ मैं उस सरकार को बर्खास्त करने की मांग करूंगी।" स्वयं राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के पास गईं और 31 जुलाई 1959 को शाम को 6 बजे राष्ट्रपति भवन से विशेष आदेश जारी करके केरल में के द्रीय शासन की घोषणा कर दी गई।"

यह कदम इंदिरा जी के लिए एक चुनौती लिए हुए भी था क्योंकि अब यह उत्तरदायित्व उन पर आ गया था कि वह केरल में सर-

धार बनाने में सफल हो जाये साम्यवादिया को हराना आसान नहीं था क्योंकि उस पार्टी ने मतदाताओं का विश्वास नहीं खोया था। इंदिरा जी ने प्रजा समाजवादी पार्टी व मुस्लिम लीग से चुनावी समझौता कर लिया। उनका तब था "मैं नहीं मानती कि केरल मुस्लिम लीग और से अधिक साम्प्रदायिक है—घापको साम्प्रदायिक दला व साथ चलता ही होगा" और इस प्रकार कांग्रेस की जीत का राज रहा इस पार्टी द्वारा अल्पमत के आधार पर सरकार की परम्परा। साम्यवादिया का मत प्रतिशन 35 27 से बढ़कर 43% हो गया मगर सीटा की सत्या गिरी 60 से 22 तक। इन्दिरा जी के राजनैतिक करिश्मा का पहला प्रदर्शन था। मगर नेहरू की उपस्थिति और लोकप्रियता की चक्काचौंध में राजनायिक इन्दिरा गांधी के पहले अध्याय को साफ साफ नहीं पढा था मगर केरल की वायवाही नेहरू और इंदिरा की कार्यशैलियों की विभाजन रेखा गांधी केरल में मुस्लिम लीग के साथ समझौते के बाद उड़ीसा के भूतपूर्व सामंती की गणतंत्र परिषद के साथ सभी सरकार बनाना इस दिशा में एक और कदम था। इंदिरा गांधी ने पिता की मृत्यु के पश्चात् कुछ समय तक फिर एकाकीपन महसूस किया। वह दबी दबी रहने लगी, ज्यादातर सामोश। इस प्रकार 27 मई, 1964 को समाप्त हुआ इंदिरा का वह रूप जो 'जवाहरलाल की बेटा' होते हुए भी सहचरी, परिचायिका, सलाहकार और नेहरू जी के शब्दों में 'अब नेता भी हो गई थी। उनके पिता के साथ बेटा के रूप में 1917-64 का यह काल न केवल इंदिरा के लिए जननेता बनने का प्रशिक्षण काल था। पर जैसा मैं सोचती हू शायद उनके जीवन के असमूल्य क्षण थे जब बिना उत्तरदायित्वों के भी राजनायिक जीवन को इतना प्रभावित करती रहीं।

फिरोज राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो गए थे और हमारे घर अक्सर आयां करते थे शान्तिनिकेतन जाने से पूर्व ही उ होने मेरे सामने शांती का प्रस्ताव रखा पर तब मैंने ना कर दी थी। इस बार मैं उँ होंने

मेरी माँ से भी बात की थी । मैंने अपने माता-पिता से इस बारे में बात नहीं की थी । मैं विदेश से भारत लौट रही थी और फिरोज भी इंग्लैंड में ही थे । पन्नाई के लिए ब्राक्सफोर्ड चुनने का मेरा यह भी कारण था । मैं उन्हें दोस्त ज्यादा समझती थी । मैं मेरे और परिवार तथा भारत के बीच बड़ी । मैं फिर पेरिस चली गई थी और फिरोज को वहाँ मुझे मिलता था । पेरिस में माँ मात्र की सीढियों पर मेने फिरोज के प्रस्ताव पर अठ त हा भी भर दी । पर हमने इस बारे में किसी को नहीं बताया इंदिरा गांधी के पुस्पदास को दिए गए साक्ष्यों पर आधारित जीवन के कुछ पृष्ठ से")

□

## पत्नि के रूप में

26 मार्च, 1942 को इन्दिरा ने 'इन्दिरा' गांधी बन गईं यह विवाह अनूठा था। उल्लास और राष्ट्रीयता के साथ एक अजीब सी टीम न विवाह मण्डल को त्रियेणी सा पावन बना दिया था। जवाहरलाल नेहरू का विवाह हुआ था ता व मना जी विदेशी कीमती माडी और गहना स लगी थी। केवल 26 वर्ष पढ़ने माँ-बापू का विवाह बड़ी धूमधाम और कदमीरी राजा मास्तीलाल ने गानो गीत में किया था किंतु इन्दिरा जी मण्डल में नेहरू जी के हाथ से कसा हुए सूत की साडी पहनी थी। मण्डल में नेहरू जी बगी के विवाह में उल्लास से पूजनया अपने को खो देना चाहते थे पर उनकी डबडबाई आते कह रही थी कमला बाग तुम भी होनी। मैं निपट अनेलापन महमूस कर रहा हूँ।' एक पुस्तक में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने लिखा है।

उन दिनों में का बेट मैं पढ रही उन दिनों की बात है। तमक में याग्रह के दौरान एक स्कूल में ध्वजारोपण समारोह था। फिरोज उसी स्कूल में पढ रहे थे। मेरे विचार से फिरोज ने पहले पढ़ने मुझे वही दखा दहा किसी और व्यक्ति भण्डा फहराना था। पर बड़ा लाठी-चाज हो गया और भण्डा फहराने वाग व्यक्ति को गिपनार कर दिया। उठाने मुझे भण्डा वमाते हुए कहा इसे गिरने मत देना "धक्का-मुक्का में मैं गिर पड़ी और मुझ चाट भी आई। लाठी सहने का यह मेरा पहला अनुभव था।

फिरोज का नेहरू परिवार से सम्पर्क एक मजूठी कहानी है। इलाहाबाद की गर्मी मदाहर है लू के थपड़े, बड़ी धूपसे तपती, सबके शीर नुप्रसारा माहौल। लेकिन सत्याग्रहियों को तो पैदल चलकर धरना देना पड़ता था। उस दिन भी एक जुलूस भाया था। इविंग निस्वन्वर बॉलिज के सामने धरना देन। जुलूस में हर उम्र की लड़के व महिलाएँ थी। तिरगे हाथ मये। जुलूस के आगे-आगे कुछ महिलाएँ चल रही थीं उनमें से एक बहुत सुन्दर नाजुक सीमद्र महिला, थी-नाम कमला नेहरू। उसके साथ उसकी नएद वृष्णा हठीसिंह भी थी। भारत माता जिदाबाद बन्देमातरम् व 'महात्मा गांधी की जय' के साथ वह लड़कों का आह्वान कर रही थी कि यह धम्रेजी छोड़, कर राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल हो जावे। लेकिन कुछ सरारती लड़के चार दीवारी पर बैठे महिलाओं का मजाक उड़ा रहे थे। नाजुक सी दिग्ने वाली कमला को गर्मी व थकान सहन न हुई। उन्होंने माफी मांगने पर मुक्का मारे उन शीरतो की परेशानी का मजाक उड़ाया। थोड़ी ही देर बाद कमला मारे प्यास व परेशानी से बेहोश हो गई। कुछ क्षण बाद एक गोरा सा लड़का इन लोगों की शीर बढ़ा। उस लड़के ने अपने साथियों की मदद से बेहोश कमला को उठाकर धने पड की छाया म, लिटाया शीर पानी, पिलाया शीर उहे धर तक छोड़ भाए।

पुरुष नेहरू की सभा से रह गए व बच्चों की तरह फूट २ कर रीने लगे इन्दिरा जी पर मानो धाका ही टूट पड़ा। सभी बिलल रहे थे शीर पास खडे फिरोज सोच रहे थे कि कौन किसको धावस बधाये? कुछ दिना बाद इन्दिरा जी स्वदेश लौट आई शीर वह जब दूसरी बार विदेश भावसफोर्ड में अपनी शिक्षा पूरी करने गई तो द्वितीय विश्व युद्ध के बादल मडरा रहे थे। नेहरू जी ने लिखा था कि जीवन में खतरे सभी जगह है यदि चाहती हो तो भा जाओ शीर मन स्वत हो इन्दिरा ने धकेले ही चलने का निश्चय किया बाद में साथ हो गया तो भारतीय मुक्का का—फिरोज गांधी शीर भूपेश गुप्त था।

उस समय का एक सस्मरण है जो इंदिरा जी के स्वभाव के एक बड़े पहलू की ओर संकेत करता है वह है स्पष्टवादिता। पानी के जहाज में चलते-रूँ ये लोग दक्षिण पट्टे तो वहाँ पहुँचे से ही भारतीय प्रवासी इनके स्वागत के लिए प्रस्तुत थे। मगर कि उनसे पहुँचने से पहले ही समाचार पहुँच चुका था कि गांधी देश की ओर जवाहर की बटा मिस इंदिरा नेहरू आ रही है। गांधी जी का काय दोन रहा हुमा बनिष् अवश्य ही उनका स्वागत करता। मगर मिस नेहरू ने कहा "सभा म मैं चलूंगी नहीं किरोज गांधी और भूपेश गुप्ता के साथ प्रतीका की वस्तुओं देखती हुई इंदिरा सभा में पधारी प्रवासी भारतीयों ने हादिक स्वागत किया और गांधी व नेहरू के गूग गए। इंदिरा "जी को बहुत सम्मान मिला। म न मे सरोजक ने कहा खै है कि मिस नेहरू कुत्राबोन नही पायगी।" इंदिरा जी को गुम्धा मा गया "मैं जरूर बोनूगी।" यह सुनने ही सब प्रवासी भारतीय खिल उठे कि तु इंदिरा जी के भाषण के प्रतिना स्वरुप कोई भी भारतीय उ ह विदा करने नही प्राया। उ होने एक वान कही "भारत अग्रे तो के खिनाक लडकर आजागी चाहना है वयाकि भारत भारतीयो का है। और अग्रे जा को वहाँ शोरग का अधि कार नही इवी तरह प्रतीना प्रकीकिया का है उनका शोरग करने का अधिकार किवी को नही है यह आशवा की बात है कि भारत वाले अग्रे जा का विरोध कर रहे हैं और यहा पर प्रवासी भारतीय शोषण मे अग्रे जो का साथ रहे है। - - - - -

फिरोज गांधी और इंदिरा जी का सम्पर्क किशोरावस्था से प्रारम्भ था जो दिन प्रति दिन प्रगाढ होता जा रहा था। जब नेहरू को इसकी खबर दी गई तो प्रियदाशनी इंदु से उहोने कहा जल्दी मे कोई विणय न बने। काफी समय तक विदेशा मे रही हो। एक व्यक्ति तक पसद सीमित करने के पहले प्रच्छा रहे औरी को भी परख लो। वैसे अभी मुझे जेन से भी छुन्न दो। और अपनी दोनो भुमाप्रा से भी पूछ देखो। उनकी क्या राय है तुम्हारी रसद के बारे मे।"

इन्दिरा जी के सामने एक विषम स्थिति आ गई। उनके विचार थे कि निएय तो ले लिया—फिर उसे नियामित करने में दूसरे की सलाह क्यों ली जावे और फिर यह तो व्यक्तिगत मामला था। फिर भी पापू ने जो कुछ कहा उसका पालन तो करना ही चाहिए। बड़ी भुमा विजय लक्ष्मी से बात चली तो उन्होंने अपने भाई के भांदोलन को ही दोहराया। इस मामले में निएय सोच समझ कर ही लेना चाहिए।” इन्दिरा जी को निराशा हुई। छोटी भुमा बम्बई थी। इन्दिरा जी कृष्णा हठसिंह की राय लेन पहुँची। उ होने पहला सवाल किया “तुम्हें यह राय किसने दी। उत्तर था “पापू ने कहा पूछ देखो।” और उहे यह खबर किसने दी, कि तुमने फिरोज गांधी को स्वीकार कर लिया।” क्या मैंने खुद ही कहा था। कृष्णा जी चाकत रह गये है अपने विवाह की बात उ होने स्वयं बड़ी बहन के माफत जवाहर जी तक पहुँचाई थी यह लडकी स्वयं पिता से चर्चा कर बैठी। किन्तु वह भूल गई कि कमला जी की मृत्यु के पश्चात् नहरू जी उसके पिता और माँ दोनों थे। उत्तर मिला थोड़ा और ठहरो, जल्दी क्या है। इन्दिरा जी का धैर्य सीमा पार कर गया। “आपने तो राजा साहिव से विवाह करने का फैसला हफ्ते भर में तो लिया था और मुझे सलाह दे रहे हो ठहरने की। मैं फिरोज गांधी को सम्बन्ध से जानती हूँ।”

वास्तव में वह फिरोज को सम्बन्ध समय से जानती थी और उसकी निष्ठा पर मुग्ध थी। देश के बड़े-बड़े घराने के लोग जवाहर की बेटी को अपनी पुत्र-वधु बनाने को मातुर थे किन्तु इन्दिरा जी, व्यक्तिगत मामले में घन और वैभव को नहीं ध्याने देना चाहती थी। जिसके आदर्श पूजावाद और समाजवाद के विरुद्ध सपप करने में ही पूरा परिवार ध्वस्त हो गया था, दादू चले गए थे, मम्मी छोड़ गई थी, पापू जेलो के निवासी हो गए थे और वैभव के लिए विख्यात भानुद भवन का धेश कीमती एक-२ करके गायब हो गया था। जब वह बच्ची थी तभी से फिरोज



का पारिवारिक सम्बन्ध था। उनकी माँ ने तो वह चाहते थे और उनकी सेवा सुथ्रुषो भी सूच करते थे। 1941 में जब जवाहर जी जेल में थे तो इंदिरा जी ने बताया कि वह जब इंदिरा जी अपना नियम विवाह के सम्बन्ध में कहलाया तो पंडित जी खुश नहीं हुए। उन्होंने कहा "भ्रमी पहले अपनी सेहत ठीक करा और यहाँ इतिमान से कुछ और लोगो को समझने की भी कोशिश करें। इंदिरा जी को गांधी जी से भी मिलने की सलाह दी। गांधी जी ने फिरोज को देखने की इच्छा व्यक्त की और देखने व बान करने के पश्चात् अपनी सहमति दे दी। जब यह बात देश के हिंदुस्तान को जात हुई तो एक हंगामा-सा मचा दिया गया। नेहरू परिवार की बेटों व एक पारसी से विवाह। फिरोज चाहते थे कि विवाह बहुत सादगी से हो। लेकिन गांधी जी का आदेश था कि विवाह बहुत नहीं किंतु थोड़ी भूमधाम से अवश्य किया जावे और गांधी जी को भ्रमा फिरोज के लिए ईश्वर का वचन थी। वहाँ पहुँचकर दम्पति ने पंडित जी को इलाहबाद तार दिया काश 'हम आपका यहाँ से ठंडो हवाओं के भाके भेज पाते।' इंदिरा जी को भ्राम बहुत पसंद थे। नेहरू जी न चिढ़ाने के लिए तार दिया 'घ यवाद। लेकिन तुम्हारे पास भ्राम कहा है ?

फिरोज से शादी करना चाहती है तो नेहरू जी उनके इस निश्चय में इसलिए परेशान नहीं हो गए थे कि फिरोज पारसी थे और वह एक कश्मीरी ब्राह्मण वरन् उनकी परेशानी का मुख्य कारण था कि फिरोज और इंदिरा की पारिवारिक पृष्ठ भूमि में बहुत अंतर था। फिरोज एक मध्यम वर्गीय परिवार के युवक थे और इंदिरा धन-बैभव में पली थी। एक स्वर् पर और पश्चिमी से आकर पालन पोषण हुआ था। भ्रमा विजय लक्ष्मी ने परम्परा और सस्कृति की बातें बतलाकर उन्हें डराना भी चाहा किंतु वह नहीं मानी। जवाहर जी ने गांधी जी से परामश की खुशबू त सिंह ने अपनी पुस्तक 'इंदिरा गांधी बडते कदम' में लिखा है "फिरोज के प्रति उनके प्यार की सबसे बड़ी वजह यह थी कि

फिरोज में उनके माता-पिता के प्रति आदर का भाव था और उनके एक  
 जैसे राजनैतिक विचार थे। "मार्च 1942 में बहुत साधारण में से  
 दोनों का विवाह से सम्पन्न हुआ। अग्नि के साथ फेरे  
 लेने के बाद वह मधुमाम मनाने के लिए काश्मीर गईं। लौट कर इलाहा-  
 बाद आई पर वह बहुत कम समय ही शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकी  
 और उनका एक बूढ़ी बने रहना असम्भव था। खुशवर्तसिंह के शब्दों में  
 'वह उनका जन्म एक राजनैतिक परिवार में हुआ और विवाह एक  
 राजनैतिक पति से। भारत छोड़ो आंदोलन में उनके समीप आकर पूरा  
 परिवार ही गिरफ्तार किया गया और पुलिस की मार ने उन्हें राजनीति  
 का पहला पाठ पढ़ाया।

"मेरे विवाह के तुरंत बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का  
 इलाहाबाद अधिवेशन हुआ। अधिवेशन के लिए पडाल बनाने की जिम्मेदारी  
 मेरे पति पर थी। मुझे स्वयं सेवकों के साथ काम पर लगाया गया। हम  
 दोनों बहुत सुबह अपनी जिम्मेदारियां निभाते निकल जाते थे और काफी  
 रात तक एक दूसरे को देख नहीं पाते थे।" जीवन के कुछ पृष्ठ से

इस सम्बन्ध में इन्दिरा जी स्वयं कहती हैं "मैंने अपने छिपने  
 की जगह से निकल कर भागण शुरू किया कि वदूकें ताने सिपाही मेरी ओर  
 बढ़े। एक सिपाही सगीन बंदूक तान कर मेरी ओर बढ़ा। उसकी सगीन  
 मेरे जिस्म को छूने लगी थी। छज्जे पर लड़े फिरोज यह देख रहे थे कि  
 बेहद उत्तेजित हो उठे। भूल गए कि वह भूमिगत है वे-सीधे मेरे पास  
 आए। उस सिपाही से बोले "या तो वदूकें हटायो या भाग जाओ। हम सभी  
 को गिरफ्तार कर लिया गया।" जीवन के कुछ पृष्ठ से।

इसके बाद इन्दिरा जी अपने नए घर रायबरेली में गईं पर  
 उनको यह घर कितने दिन बाध सका सन् १९४२ का खूनी अगस्त आया।  
 देश के बड़े-बड़े नेता बम्बई पहुंचे। "करो या मरो" 'अग्नेजो भारत छोड़ो'  
 का नारा गूज उठा। सभी नेता गिरफ्तार कर अज्ञात स्थानों को भेज दिए-

गए। इसने याद इंदिरा जी इलाहाबाद धाई। गांधी जी व अपने पिता  
 का संदेश जेल से प्राप्त हुआ और वह उन स देश को छाना की, समा म  
 प्रसारित करने लगी। फिरोज दूर दूर से सब कुछ देख रहे थे। एक  
 अग्रिम सैनिक न गांधी का निगाना इन पर साधन हुए घादेश लिया  
 'बोलना बंद करो, यना वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि एक कट्टाबर  
 युवक ने रामकल पर नपट्टा मारा बना क्या? वह युवक था  
 फिरोज गांधी। पुलिस ने घेरा डाल दिया और फिरोज व इंदिरा गांधी  
 को गिरफ्तार कर लिया। उहे 13 माह की बंद हुई। जेल म उनसे  
 बलास सी के एक साधारण कदी जसा व्यवहार किया गया। "बीमार  
 होने पर तब उहे गुर्दे और फेफड की शिकायत थी जेलरा को उनके  
 प्रति अभाव और अपेक्षा के भाव थे। उनके लिए भेजे गए आम बह सुद  
 खा जाते थे, भी उह कटु नहीं लगा। उ होने सबट का सामना पूरी  
 तरह किया।"

वह सदैव चर्चा का विषय रही और चर्चा उनके वैवाहिक  
 सम्बन्धों को लेकर भी हाता रहना था कि वह मधुर न थ। 'मनोरमा'  
 न। 'नीयो की एक मुग्ध पत्रका कर है। उसके द्वारा उनकी पसलन स्टाफ  
 मे रही एक स्त्री विममा से साक्षात्कार इस सम्बन्ध म लिया गया।  
 मनोरमा के अनुसार "विममी जी के नाम लिखे गए इंदिरा जी के पत्रों  
 को पुलिस पढने व एल्बमो के सहजे अनेक चित्रा को देखने व विममी  
 जी से बात-चीत करने पर वही भी ऐसा नहीं लगा। कि इंदिरा जी के  
 नारी मन की सहज स्वभाविकता या कोमल मावुकता उन पति पत्नी के  
 सम्बन्धों के बीच न रही है वे पत्र विशेष महत्वपूर्ण थे। एक जब फिरोज  
 अस्वस्थ थे और एक जब फिरोज न रहे और पिता ने उहे मन-बहलाव  
 के लिए मत्री आमंत्रण पर विदेश भेजा था। इन पत्रों से प्रकट है कि  
 फिरोज गांधी व इंदिरा जी का दाम्पत्य जीवन अत्यधिक मधुर व  
 सुखदे था।"

गारिवारिक जीवन में इन्दिरा जी ने अपनी पूहणी की भूमिका  
 आदर्शगोत्री के घर में निभाई। इन्होंने प्रथम पुत्र राजीव की पालि  
 सत्र 1944 में हुई व द्वितीय पुत्र सत्य सन् 1946 में पैदा हुआ।  
 1947 में जब देश स्वतंत्रत हुआ और नेहरू जी भारत के प्रथम प्रधान  
 मंत्री बने। इन्दिरा जी को घबेरी सन्तान होने के कारण पत्नी के  
 साथ-२ पुत्री का कर्तव्य भी पालन करना पड़ा। इन्दिरा जी सपरिवार  
 देहली आ गईं। उनके पति एक महत्त्वपूर्ण राजनैतिक हस्ती बन गए  
 और ससद में चुने गए। शुभवतसिंह के अनुपार "प्रब दोनो के जीवन में  
 अलग-२ रास्ता पकड़ा फिरोज न एक अलग मकान ले लिया और इन्दिरा  
 प्रधानमंत्री भवन में आकर अपने पिता की निजी महापक्, सेक्रेटरी, नस  
 व गृह परिचारिका बन गईं।" उनका काफी समय तो पिता की देख-रेख  
 में लग जाता और बाकी समय अपने दोनो बेटों की देखभाल में।" उसी  
 बीच चर्चा यहां चली न कि दानों में मन-मुटाव हो गया किन्तु कही भी  
 इस प्रकार का कोई प्रमाण लिखित को नहीं मिला। अलग-२ फिरोज के  
 स्वभाव के विषय में जानना इस परिप्रेक्ष्य में उचित रहना, स्वाभिमान  
 उनमें कूट-२ बर भरा था। उन्होंने अपने घर वाली से सख्त तालीद कर  
 रची थी कि प्रधानमंत्री की रिस्तेदारी का प्रभ व दिखाकर कभी कोई  
 लाभ न उठाये। स्वाभिमानी फिरोज को तीनमूर्ति में घर जवाई बनकर  
 रहना बहुत अस्वस्ता था। वह गरीबा के ह्मदद थे लेकिन प्रधानमंत्री  
 निवास की सुरक्षा, व्यवस्था के कडे नियमों के कारण फिरोज को बड़ी  
 परेशानी का सामना करना पड़ता था। फिरोज गांधी को प्रधानमंत्री नेहरू  
 के साथ फोटो खिचवाना या उनके दामाद के रूप में पीछे-२ लगना कतई  
 पसंद नहीं था। वे हमेशा उही समारोहों में भाग लेते थे। वहां अपनी  
 निज की हैसियत से जा सकते थे।" (पुष्पा भारती द्वारा लिखते फिरोज,  
 एक कहानी भूलसी' प्रथम युग मण्डल 'विशेषांक' 1985)

रहने का कारण मेरी दृष्टि में पुहपोचित स्वाभिमान हो रहा  
 होगा। किन्तु अलग-२ रहकर भी दम्पती अपने दाम्पत्य जीवन में बिलखे

नहीं थे। मैं फिर उसी विम्मी को उदाहरित करती जिसने मनोरमा को  
 अपनी साक्षात्कार देते हुए कहा "इंदिरा व फ़िरोज़ सिनेमा बहुत दखने  
 थे। सब दायते होती, पिक्नीक मनाई जाती। साथ में यूनुस व गैस  
 माह्व भी रहते। मुझे याद है फ़रीशवाद में मया-२ होटल हो-गिडे-इन  
 खुला था। फ़िरोज़ सबको लेकर वहाँ गए थे। फ़री-गायरी का बड़ा  
 गोक था। वे बड़ भरत स्वभाव के थे। सबसे मुलकर हसत बोलते। सुग  
 मिजाज बहुत थे वहाँ इंदिरा चुपचाप रहा करती थी। बहुत सकाची व  
 शक्ति स्वभाव की थी। सभी लोग इंदिरा जी को देखकर यह यकीन  
 नहीं कर पायेंगे कि वह उस समय अपने परिवार व घर की देखभाल  
 साधारण गृहण के सामान ही करती थी। उह परिवार व घर की देख-  
 बाल से बेहद लगाव था। भोजन बनाने की पुस्तक व गृह-गृहस्थी से  
 सम्बंधित पत्रिकाएँ जैम (Women Home) मगवाती व पढ़ती।  
 विम्मी जी प्राण कहती है वह फिराज ही थे जिनकी प्रेरणा से सकोची,  
 शमिली इंदिरा घर परिवार के स्नेह बंधन के बाहर विद्व-बधुत्व तक  
 विस्तार पा सकती वह खुद कहती कि फ़िरोज़ न चाहत तो मैं सक्रिय  
 राजनीति में कभी न होनी।" विम्मी को अपने जन्म दिन पर भेजे गए  
 गुमनामना स देन को लिए अयवाद देते हुए इंदिरा जी लिखती है 'मुझ  
 सबका प्यार मिला मगर मैंने दिन बड़ी बचेनी से व्यतीन किया। फिराज  
 अस्वस्थ हैं और वह अपने लिए कुछ भी करने को मना कर देते हैं। मैं  
 उनके लिए वहद चिंतित हूँ मैं नहीं जानती कि मुझे क्या करना चाहिए।  
 बहुत दुबले हो गए हैं वो। 1952 में इंदिरा जी पंडित जी Official  
 Hostess नियुक्त हुई। उह रात्री में सरकारी भोज आदि पर भी निमंत्रण  
 होता। 1952 की चुनाव की तयारियां चल रही थी। नेहरू जी फूलपुर  
 से और फ़िरोज़ रायबरेली से चुनाव लड़ रहे थे। लखनऊ पहुंच दोना ही  
 पति-पत्नी चुनाव की तयारियो में लग गए। इंदिरा जी कभी फूलपुर तो  
 कभी रायबरेली बीच-२ में लखनऊ भी आती रहती जहा विम्मी जी  
 दोनो बच्चो के साथ रहती थी। उनके दाम्पत्य जीवन के सम्बंध में

मापको देखता हूँ" सभी कुछ हसी मजाक के वातावरण में चल रहा था। प्रचानक घाय का प्याला हाथ में लिए हुए ही फिरोज चुटक पड़े और लाख प्रयत्नों के पश्चात भी उन्हें फिर होश में न लाया जा सका।

इन्दिरा जी पर, यह एक भयानक घाघत था। कितने ही ऊँचे से ऊँचे पद पर भारतीय नारी प्रामोद हो, किन्तु पति-विहीन जीवन ही एक हिंदू नारी के लिए अभिशाप है। विन्मी जी भी कहती है "फिरोज के जाने के बाद वह बहुत बिकल हो उठी। बहुत अव्यवस्थित हो उठी थी भीतर-ही भीतर। प्रचानक-शोचो-विमला में देहरादून जाऊंगी। मैंने पूछा, वहा कहा जाना है तो-बोली मुझे वहां रामकृष्णा भ्रात्रम जाना है, पण्डितजी ने मुझे इशारे से कहा जाने दो रोकता नहीं मैं उह साथ लेकर देहरादून गई। बच्चे वहा उत दिनों दून स्कूल में पढ़ रहे थे। शनिवार रविवार की बात थी। राजीव सजय-को लेकर मा के पास आए, जिस तरह बच्चों ने उन्हें मना लिया। हम उन्हें साथ लेकर पहाड़ों के बीच गेस्ट हाऊस में रहने के लिए चले आए। उन दिनों न्यूपोक, मेक्सिको से निमंत्रण मिला। कुछ दिनों मन-बहलाव के लिए वहा गई थी पर उस पर मैं वहाँ मन नहीं लगा। वहाँ से लिखा "मुझे बड़ा प्रजीव सा लगना है जब भी धकेली होती हूँ। मैंने का बांध भासुभो में फूट पडना चाहता है। मैं वापस आना चाहती हूँ।"

- यह सब उद्घरण व अ य सथ्य यह प्रमाणित करते हैं कि इन्दिरा जी पत्नी के रूप में भी अपनी भूमिका भली प्रकार निभा पाई। चर्चा प्रचामी होती है कि-दाम्पत्य सुख उन्हें नहीं प्राया किन्तु परिस्थितियों का सामना करते हुए दोहरी भूमिका (पत्नी व-वेदी की) निभाते हुए भी वहा-सोहा-समय का हो सही, दाम्पत्य सुख प्राप्त की। विवाह के पश्चात् के-धप-जस में, दो पुत्र-होने पर उनके-लाजत-साजत में, "पिता के घर की परिचारिका बन कर वह पतिविहीन होने के पश्चात भी यही हिम्मत

व निर्भीकता से कांग्रेस-प्रध्यक्ष की भूमिका भली प्रकार निभा पाई, यह प्रसाधारण प्रतिभा का चोतक है। इन्दिरा जी ने काफी वाद में एक इन्टरव्यू में कहा था 'मैंने सुना है कि इस प्रकार की खबरें फैल रही हैं कि हमारा विवाह असफल हो गया है या टूट रहा है। मैंने अपने पति को छोड़ दिया है या हम लोग अलग हो रहे हैं। लेकिन यह सब नहीं है हम लोग बहुत सुखी रहे हैं हमारे समय समय पर आपस में झगड़े भी हुए हैं कभी कभी परिस्थितिवश कभी कभी यूँ ही। वे झगड़े अधिक रहे हैं। वास्तव में हम दोनों का मिजाज बहुत गम था। अगर मेरे पति ने मना किया होता तो मैं सामाजिक जीवन में कभी नहीं जाती। वह चाहते थे कि मैं कुछ करूँ। मेरे सामाजिक जीवन पर उतरने पर मुझे सफलता मिली। दूसरे लोग, मित्र, रिश्तेदारों ने यहाँ तक कह डाला कि इन्दिरा के पति ऐसे हैं, वैसे हैं, पता नहीं ऐसा पति पाकर वह क्या महसूस करती होगी। इन बातों से वह बहुत परेशान हो जाने थे और उन्हें सामान्य करने में मुझे हफ्तों लग जाते थे। पुरुष के अड़ की चोट पहचाना सबसे बड़ा अपराध है। हम दोनों इन चीजों से अलग अलग रहकर एक दूसरे के मजदीक आने का प्रयत्न करते थे।

लेकिन इन सब घतव्यो से अलग हटकर देखा जाय तो यह बात सच थी कि फिरोज में कुछ हीन भावना पैदा हो गई थी। इंग्लैण्ड में उनकी शिक्षा का भार उनकी एक घाटी ने उठाया था जो लखनऊ में डाक्टर थी। वह फिरोज को बहुत प्यार करती थी। दूसरे उन्हें अपने ससुर प्रधानमंत्री श्री नेहरू के घर बड़े सुरक्षा प्रबंधों के बीच रहना भ्रमरता था। लोकतन्त्र का सदस्य होने के नाते उन्हें एक घर भी मिल गया था। इन घर को उन्होंने खूबसूरत पर्नीचर से सजाया और वहाँ बढिया बगीचा बनाया। १९५८ से यह प्रकल्पे रहते थे किन्तु उनमें कोई बड़ी महत्वकांक्षा नहीं थी। फिरोज द्वारा प्रणम मकान लेने के कारण उनके

बीच भगडे हुए। यहाँ तक कि ससद में भी इस प्रकार की प्रफवाह उठी कि हिंदू विवाह कानून में तलाक की सुविधा इन्दिरा फिरोज में तलाक की सभावना को देखते हुए की गई है। इन्हीं दिनों में उनके विवाह के बारे में काफी कुछ कहा व सुना जाने लगा।

फिरोज बच्चों से बहुत लगाव रखते थे और उनके लिए ध्यान देने की वही क्षण होते थे जब वह बच्चों के साथ होते थे। इसलिए खाना वह इन्दिरा व बच्चों के साथ प्रधानमंत्री निवास पर ही खाते रहे। Dam Moraes ने अपनी पुस्तक Mrs Gandhi में इन्दिरा जी के विवाह का एक राजनैतिक भावश्यकता के रूप में चित्रण किया है और उन्होंने यह बयान भी किया है कि इन्दिरा जी ने अपने व्यक्तिगत जीवन को कैसे अपने पिता के प्रधानमंत्रीत्व के कतब्यों के पालनायें सहायता देने के सद्देश्य से बलिदान किया। १९७७ में लेखकों से हुई वार्ता में इन्दिरा जी ने स्वीकार किया 'मुझे यह करना पड़ता था क्योंकि मेरे पिता मेरे पति से अधिक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे थे।

मेरे विचार से यदि इन्दिरा व फिरोज के दाम्पत्य जीवन में कुछ कड़वाहट थी तो उसका कारण फिरोज का पुरुषोचित महँ भाव और इन्दिरा जी का अधिकतर अपने पिता के साथ रहना ही हो सकता है। किंतु इस समस्या की गहराई में जाने से पूर्व हमें फिरोज गांधी के स्वभाव के विषय में जानना भी आवश्यक है। श्री डाम मॉरिस ने अपनी पुस्तक Mrs Gandhi में फिरोज के प्रारम्भिक जीवन का जो चित्रण किया है उससे उसके ही शब्दों में उनकी यह तस्वीर उभर कर आती है। "He was a bright boy, skilful with his hands and interested around him, though he was possessed of a somewhat perverse some of though" लेखक के अनुसार फिरोज का प्रधान भावकण



कमलाजी की घोर इदरा जी भी उनके समीप केवल इसीलिए आई क्योंकि किरोज कमलाजी को बड़ा स्नेह व धार देते थे। किन्तु कमलाजी ने इदरा व किरोज के सम्बन्ध विवाह पर उल्टी प्रतिक्रिया दी।

कुछ भी रहा हो किन्तु यह बात तो प्रबल है कि इदरा जी का दाम्पत्य (१९४२ से १९६०) सम्बन्ध 'घन्य स्थियों से थोड़ा भिन्न था। उत्तर प्रदेश में अंग्रेजी में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए १९३७ में नेशनल हेराल्ड की स्थापना की थी पर सन १९४१ में संसद शिप के विरोध में इसे बंद कर दिया गया था। १९४६ में इसका पुनः प्रकाशन प्रारम्भ हुआ और किरोज इसके 'प्रबंध सम्पादक' बनकर लगन के साथ घोर परिश्रम करके नेशनल हेराल्ड को पुनः जीवित किया। 'धनेश्वर राय ने एक स्थान पर लिखा है "किरोज कभी कभी तो पूरे दो दिन 'घोर' पूरी दो रात प्रेत में काम करने रहते हैं।" दिसम्बर १९४६ में सजय के जन्म के पश्चात् भी इदरा जी व किरोज की प्रवृत्ति मजे में चल रही थी लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात् वे नेहरू जब प्रधानमंत्री बने, घर का प्रबंध समालने के लिए इदरा जी को देहली बार बार जाना पड़ता था। कभी कभी देहली में वापिस लखनऊ जाने के तीन चार दिन के अंतर ही तार जाता "विशिष्ट व्यक्ति था रहे, था जाओ।" स्वाभाविक है किरोज का अपनी पत्नी, का इतना अधिक मायके जाना मुहता नहीं था पर वह जानते थे कि इनके अतिरिक्त घोर कोई चारा नहीं है।

लेकिन १९५० में जब नेहरू जी अपना १७ योर्क रोड वाला घर छोड़कर तीन मूर्ति भवन रहने लगे और इदराजी अपने पिता का घर मढ़ाने गईं तो किरोज ने तय कर लिया कि रोज रोज दिल्ली और लखनऊ का भ्रमण जान दो बच्चों के लिए इदराजी के लिए ठीक है। इदराजी को स्वयं यो रूप से तीन मूर्ति भवन में रहने की इन्होंने सलह दी। वास्तव में यदि किरोज के

स्वान पर और कोई पुष्प होता तो शायद उसे प्रधानमंत्री से इस प्रकार से सम्बन्धित होने का शक होता किन्तु फिरोज में यह भाव धर्म सीमा पर था और वह घर जमाई जैसी स्थिति को मानने तैयार नहीं थे। उन्होंने एक बार मजाक में किसी से कहा भी था "मैं अपने भगले जीवन में एक ममरूदवाली से विवाह करना पसंद करूंगा क्योंकि जब मैं शाम को घर लौटूंगा तो वह मेरी सेवा करने को तैयार मिलेगी।" (जनार्दन 'ठाकुर

(All the PM's Men)

फिरोज अपने दोनों बेटों को बहुत प्यार करते थे। फिरोज की सत्री पच्छिम बङ्गाल का दुष्प बच्चों के साथ ही देखा जाता था। वे राजीब सजय को इंग्लैण्ड बनाना चाहते थे। स्वाभिमानी फिरोज को तीन मूर्ति में घरजमाई बन कर रहना बहुत अस्वस्व था। पुष्पोचित-प्रहम भाव ही शायद दम्पति के मध्य कुछ कड़वोहट लाया होगा ऐसी मेरा मज धारणा है। व ससद सदस्य बनने के पश्चात् भी देहली जाने पर अलग ही घर से रहने लगे। उन्हें प्रधानमंत्री नेहरू के साथ फोटो खिचानों या उनके सामाद के रूप में पीछे पीछे लगना बतई पसन्द नहीं था। वे "हमेवार्" ही समारोहों में भाग लेते थे जहां अपने निजी हार्सिपल से जा सकते थे। उनके इत्तग रहने पर लीगों में कानफूसियों भी होने लगी। वास्तविकता क्या थी वह तो अब केवल प्रजा ही समायो जा सकता है किन्तु इतना प्रहम है कि उनके नजदीकी परिचित केवल इतना ही अनिते हैं कि "दम्पति के मध्य हल्की सी दरार अवश्य पड़ गई थी किन्तु बच्चों का बचन और पारस्परिक स्नेह व प्रेम का संभाव नहीं हुआ था कि फिरोज स्वतंत्र विचारों के थे और ससद में उन्होंने अपने वक्तव्यों से मूबाल सा उठा दिया था। फिरोज की निदरता, स्पष्टवादिता और सत्य के प्रति उनके हठीले भावह के सामने बड़े व्यक्तित्व होने लगने लगे थे। उनके जैसा साहसी ससद और

कोई नहीं या जिन्होंने अपने समुद्र श्री नेहरू को भी ससद में कई बार निरन्तर  
 कर दिया था। १९५८ में उनको अचानक दल का दौरा हुआ। इंदिरा जी  
 एक सरकारी मिशन साथ नेपाल गई हुई थी। तब पाकर तुरन्त लौट  
 और पति की अथवा सेवा सुधूमा में लग गई। दोनों बच्चों के साथ अगस्त में  
 बदमीर आराम करने भी गए किन्तु होनी को कौन टाल सकता है।  
 २ सितम्बर १९६० को उनको द्वितीय दौरा हुआ और ८ सितम्बर को इंदिरा  
 का हाथ घामे सदा के लिए चल बसे। इंदिरा जी एकदम टूट सी गई।  
 उन्होंने शोक से पीड़ित हो स्वयं को एक कमरे में बंद कर लिया। उनकी  
 गृह-परिचारिका का कथन है कि उन दिन यह अधिकतर रामकृष्ण मिशन में  
 जाने की बात करती थी। श्री नेहरू भी अपनी एकमात्र सतान के दुःख में  
 एकदम पत्थर से हो गए और बच्चे जो उन पर टूट पड़ा था उससे वह स्तन  
 से रह गए। उनकी बहिन कृष्णा ने जब उनके कंधे पर हाथ रखा तो वह  
 बिखर पड़े सब कुछ कितनी जल्दी और अचानक ही हो गया। अभी तो  
 बिल्कुल बच्चा ही था। और यह तो मुझे आज ही मालूम हुआ कि कितना  
 ज्यादा लोकप्रिय था वह।

समय स्वयं ही महत्त्व का काम करता है। कितना ही भयकर  
 घाव हो समय के साथ भर जाता है, इंदिरा जी ने स्वयं ही हिम्मत ली और  
 अपने बच्चों को योग्य बनाने अपने पिता के साथ विदेश जाने और राज-  
 नतिक जीवन में प्रवेश करके अपने दुःख को भुलाने का प्रयत्न किया। मेरे  
 विचार से तो परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए इतना थोड़े समय का  
 दाम्पत्य सुख इंदिरा जी प्राप्त कर सकी थी वह भी अपने आप में पूरा  
 था। सोचती हूँ कि नारी जीवन की एक मुख्य भूमिका (पत्नी की  
 भूमिका) वह बहुत सुंदर और सहज ढंग से निभा पाई। कुछ ऊँच नीच तो  
 प्रत्येक नारी के जीवन में होता है। सब कुछ होते हुए भी १९४० से  
 १९६० के २० वर्षीय जीवन में एक प्रबुद्ध व बुद्धिजीवी पत्नी की भूमिका

निभाने में उनमें किसी भी प्रकार की कमी दृष्टिगत नहीं होती है । अपने पति की मृत्यु के पश्चात् उन्हीं वही अनुभव किया जो एक साधारण हिन्दू स्त्री करती है । उन्होंने जो कुछ उस समय अपने बागजो मेनोट किया वह स्मरण योग्य है "मैं नहीं समझ पाती कि मैं क्या करूँ । मैं पूरी त रह प्रवेली और दुखी महसूस कर रही हूँ । भाप जानते हैं कि फिरोज और मैं कौन प्रसहमत थे और कई बरस से झगड़ रहे थे तब भी धरलग होने के बजाय या मंत्री सम्बन्ध कमजोर पड़ने की वजह हम पहले के मुकाबले एब दूररे के अधिक करीब थे । मैं बिल्कुल खोपी, खाली और मरी हुई महसूस कर रही हूँ ।"

### मा के रूप में

ममतामयी माँ के रूप में इन्दिरा गांधी ने दोहरी भूमिका निभाई । उन्हें अपने दोनों बच्चों के लिए माता व पिता दोनों का वर्तव्य निभाना पड़ा क्योंकि जब उनके दोनों पुत्र छोटे छोटे थे तभी उनके पिता का स्वयं स हो गया था । इन दोनों पुत्रों के कारण वह राजनीति में भी Active भूमिका प्रारम्भिक दिनों में नहीं निभा पाई क्योंकि उनके बच्चों के खालन-पालन व अपने पिता की देख रेख में ही उन्होंने अपना पूरा समय तीन भूति भवन में बिताना प्रारम्भ किया था ।

अपनी माँ बनने की खालसा के सम्बन्ध में वह स्वयं कहती हैं । विवाह करने के मेरे निश्चय के पीछे कई कारण थे । इनमें से माँ बनने का खालसा भी एक कारण थी । मैं माँ बनने की इच्छा सजोए थी पर डाक्टर का कहना था कि शायद मैं मातृत्व का शोभक व खमाल पऊँ । वह मेरे खालस्य के लिए वातक होगा । मेरी खान को भी खतरा हो सकता था । इन सब बातों से मैं बहुत परेशान थी । इसलिए जब मैं गमवती हुई तो कई चिंताएँ थी, प्राशकाएँ थी । इलाहाबाद में डाक्टर ने मेरा केस खालसे से इकार कर दिया था इसलिए कि वह मेरी दोस्त भी थी । इस

भारण में बम्बई में अपनी मुभा के पास जाकर ठहरी। बम्बई में राजीव का जन्म हुआ। वह एक स्वस्थ माँ का स्वस्थ बच्चा था। मुझे न तो प्रसव वेदना हुई और न ही कोई दूसरी तबसीफ।

। दस प्रभार सन् १९४४ में इन्दिरा जी की माँ बनने की सालगिरी पूरा हुई। बेटे का नाम रखा गया राजीवराज, जो उनके माता पिता दोनों का नाम का प्रस था। उन दिनों के सम्प्राप में इन्दिरा जी का स्वयं का कथन है "मुझे लगता है कि वे दिन मेरी जिन्दगी के बेहद हसी खुशी के दिनों में से थे। बावजूद इसके राजीव में मुझे कोई खूबसूरती नजर नहीं आती थी। टंगोर ने लिखा है हर शिशु यह स देना लेकर आता है कि मनुष्य पर से ईश्वर का विदवास नहीं उठा है। किसी भी स्त्री के लिए मातृत्व जीवन की सबसे बड़ी पूर्णता है। नए प्राणी को ससार में लाना उसकी महानता का स्वप्न देखना सारे मनुष्यों में सबसे अधिक आन्दोलन करने वाला होता है। वह आश्चर्य और आनन्द से मन को भर देता है।

। अपनी पिता जवाहरलाल नेहरू ने सर्वप्रथम अपने दोहते के जन्म का समाचार सुना तो प्रसन्न होना तो स्वाभाविक था किंतु वह उस समय जेल में थे। बच्चे को देखने की इच्छा भी पूर्ण नहीं कर सकते थे। उस समय के एक सम्मरण का इन्दिरा जी बयान इस प्रकार करती हैं "मुझे याद है एक दिन पुलिस मेरे पिता और गोविंदव ललपत को अहमदा नगर जेल से बरेली ले गई। वे इलाहाबाद की नैनी जेल में एक रात के लिए ठहरे थे और उस वारे में मुझे एक सदेश भी मिला था। पर हमें यह पता नहीं था कि मेरे पिता नैनी जेल लाये जावने या केवल ट्रेन ही बदली जावेगी। जब हमें इस बात की पक्की जानकारी हो गई तो मैं फ़िरोज बच्चे को लेकर उन्हें दिखाने ले गए। हम जेल गए। बाहर प्रतीक्षा करते रहे। मेरे पिताजी बपतजी काफी रात गए थहा। बहुत जे। सडक पर बहुत कम रोशनी थी। उसी के मदिम प्रकाश में मैंने बच्चे को

ऊपर उठाया। मेरे पिता ने उसे गौर से देखा अपने बच्चों की अपेक्षा उनके बच्चों, नाभी-पोते को खिलाने में ज्यादा ध्यान देता है। कारण उनके प्रति जिम्मेदारी की यही भावना नहीं होती।” १९४६ में उन्हें द्वितीय पुत्र की प्राप्ति हुई। उन्होंने अपने बच्चों के लालन-पालन में अपना सम्पूर्ण समय लगाने का प्रयत्न किया। फिरोज को भी बच्चों से बहुत स्नेह था। स्वयं डॉ. दरा जी के शब्दों में “राजनैतिक संघर्ष के कारण मेरा अपना बचपन असामान्य एकाकीपन और असुरक्षा की भावना से भरा हुआ था। इसलिए मैं अपने बच्चों के लालन पालन के लिए पूरा समय देना चाहती थी। किसी बीचे के लिए जरूरी घूप और पानी की तरह ही बच्चे के लिए उसकी माँ का प्यार और देखभाल भी जरूरी होती है। किसी भी माँ को अपने बच्चा को प्राथमिकता देनी चाहिए क्योंकि वे उसी पर विशेष रूप से अवलम्बित होते हैं। मेरी जीवन की सबसे बड़ी समस्या यह थी कि अपने सार्वजनिक जीवन की जिम्मेदारी और अपने घर की, अपने बच्चों की जिम्मेदारी के बीच कैसे तालमेल बिठाऊँ।”

बच्चों की देखभाल वह स्वयं करना चाहती थी। द्वितीय पुत्र के जन्म से पूर्व, प्रायः सामान्य स्त्रियों के समान ही एक पुत्र के पश्चात् एक टकी लालसा उनके मन में थी। उनका कहना है “मुझे बेटी होने की उम्मीद थी। छत्ताई तो यह है कि हमने लड़कियों के हीर तयक नाम रखे। इसलिए मेरे दूसरे बेटे का नाम काफी जल्दबाजी में तय किया गया। दोनों बच्चों को वह आपके सुपुत्र करना बिल्कुल नापसंद करती थी। वह स्वयं ही उनका सारा काम करना चाहती थी “जब राजीव और सत्य बच्चे थे तो मैं नहीं चाहती थी कि कोई और उनकी देखभाल करे। यह विचार ही मुझे नापसंद था और इसलिए मैं उनको सारा काम करने की

कोपिला करती थी। बाद में जब वे स्नान करने लगे तो मैं कोपिला दिखा करती थी कि उनके स्नान के समय के दौरान ही अपने सारे सावधानिक काम निपटाऊं ताकि जब बच्चे स्नान से लौटे तो उनके लिए खाली रह सकूँ।" जैसा प्रकृति का नियम ही है कि एक बच्चा दूसरे से भिन्न होता है। वैसे ही इबिरा जी के पुत्रों में स्वभाव की छवि यही भिन्नताएँ थी। जिसका अनुभव स्वयं इबिरा जी ने तो किया है प्रायः उनके साथियों ने भी किया। अमिताभ बच्चन उन दिनों का स्मरण करते हुए लिखते हैं (अभयुग २३ से २६ दिसम्बर १९८४) "राजीव को इस तरह के कामों का बहुत शौक था जिसमें अपने हाथ से कुछ काम करना होता था। कुछ दिमाग लगता था कुछ मेहनत लगनी थी राजीव की अपेक्षा सजय अधिक फिजीकल था। उसे छछन बूद ज्यादा पसंद आती थी। ब्राइट भी बहुत था। राजीव गम्भीर और रिजर्व थे। वह प्रायः लिखते हैं राजीव को मेकैनेकल से-अ अपने पिता से विरासत में मिला है। पिता के स्वभाव का प्रभाव उन पर अधिक है। एक दिन हम दोनों फिरोज अ बल के घर गए थे। क्या तरीके से सजाया हुआ उनका कमरा था। हर चीज बेहद साफ और चारों ओर से टपकता हुआ विशिष्ट अग्निजात्या। अगर आप राजीव का कमरा देखें तो पायेंगे कि वहाँ मोठी ठीक वैसा ही माहौल है।"

इस प्रकार दोनों विभिन्न स्वभाव के बच्चों की देखभाल, दूसरे मकान में रहने वाले पति का भी भोजन व ताबतो का प्रबंध करना, तीन मूर्ति भवन की सम्पूर्ण व्यवस्था करना मैं सोवती हूँ इबिरा जी के वह दिन भी व्यस्तता भरे रहे होंगे। कि तु फिर भी वह अपनी मुख्य भूमिका माँ की भूमिका निभाने में ही अपने मुक्त समय व ध्यान देती रही वह स्वयं कहती थी 'बच्चा के साथ आप कितना समय बिताते हैं यह उतना मायने नहीं रखता जितना कि वह समय आप किस स्तर से बिताते हैं। जब किसी के पास सीमित समय होता है तो वह उसका ज्यादा से ज्यादा उप-

योग करने की कोशिश करता है। मैंने भी चाहे वितमी ही अस्तव्यस्त न हो या बकी, या बिमार हो क्यों न रही हो हमेशा अपने बच्चों के साथ खेलने या उनके साथ किताबें पढ़ने का समय निकाल ही लिया है।”

बच्चा पर से पिता का छाया १९६० में उठ गया जब कि राजीव १६ वर्ष के व सजय १४ वर्ष के रहे होंगे किन्तु- इन्दिरा जी ने अपने पिता के समान ही पत्रों द्वारा निरन्तर सम्पर्क रखा। इंदिरा जी लिखती हैं “धीरे धीरे दो बच्चे बड़े हो गए और उनकी बोर्डिंग स्कूल भेजा गया। जब वे बोर्डिंग स्कूल में होते तो मैं देश का ज्यादा से ज्यादा दौरा करती ताकि छुट्टियां मैं उनके साथ पूरा समय बिता सकूँ। मैं अन्तर् चिट्ठियां लिखती रहती ताकि उनको मालूम हो कि मैं उनका कितना ध्यान रखती हूँ उनके बारे में क्या विचार रखती हूँ।

बच्चों के अनुशासन के प्रति भी वह सजग थी। उसका कथन है “शिक्षा का असली अर्थ है मानसिक और शारीर का प्रशिक्षण ताकि हम ऐसे अनुलिप्त व्यक्तित्व का निर्माण कर सकें। यह बात केवल स्कूल और किताबी ज्ञान से ही हासिल नहीं की जा सकती। इसका ज्यादातर भार मां पर ही पड़ता है। मां को बच्चे में अनुशासन की भावना का विकास करने और उसके चरित्र को मजबूत करने में मदद करनी ही चाहिए। बच्चे की हर सतक को पूरा करना उनके प्रति सच्चा प्रेम नहीं है। सच्चा प्रेम बच्चों में अनुशासन पैदा करना है।”

अपने सावजनिक कार्यों के सिलसिले में इन्दिरा जी को बाहर विदेश भी जाना पड़ा किन्तु उनका कथन है कि बच्चों को कभी उनसे शिकायत नहीं रही है यह कहती है। उन्होंने मेरा विदेश या घर से बाहर उनसे अलग जाना उपयोगी समझा क्योंकि उसके जटिल में भारत के सारे बच्चों के लिए बेहतर भविष्य के काम में अपनी बनाने भूमिका पदा कर रही थी।





“यदि हालात खतरनाक है तब तो बचाव मद्द्दत घनेले वँठे रहने के मुझे वहाँ पहुँचना चाहिए।” मैंने समान बायाँ ओर रवाना हो गई । छाय में दो थोरी घालू भी ले लिए । साहदरा ओर देहली के बीच गाडी रुक गई । भाँका तो देखा लोग किसी का पीछा कर रहे थे । मैं तुरन्त गाडी से उतर पडी ओर स्थिति पर नियन्त्रण किया । मैं एक ब्यक्ति को तो बचाने पर सफल हो गई ।” अस्वस्थ हाते हुए भी ओर दो छोटे बच्चो का साथ होते हुए भी इस प्रकार का आचरण करना उनके उसी स्वभाव का दिग्दशन कराता है जिसका प्रारम्भ मे भी जिफ़ हो चुका है, वह हैं उनके व्यक्तित्व का एक अनूठा अंग, उनकी निर्माकता ।

८ सितम्बर १९६० को जब उनके पिता की मृत्यु हुई, तो राजीव १६ वय के ओर सजय १४ वय के थे । नाना की मृत्यु भी २७ मई १९६४ को हा गई । अय बच्चे के ल अपना मा के सम्पर्क में डी रहे । दून स्कूल व अय विद्वविद्यालयों मे अपनी गिक्षा पूरी करके राजीव तो अपनी इच्छानुसार PILOT बन गया कि तु सजय प्रारम्भ से ही चल प्रकृति के थे । श्री नेहरू के लिए भी ओर इदिरा जी के लिए भी स्वाभाविकतया यह बहुत दु ख का विषय था कि वह दोनों जो आशाएँ सजय से लगाए डैठे थे उसके अनुरूप उसका आचरण नहीं था । कई अमीरजादो व बडे V I P व्यक्तियो के बच्चे मिलकर देहली मे मीज मस्ती उठामा करते थे उही मे से सजय भी एक था ।

सजय ने भी एक सिख लरकी मेनका आन द को पसंद कर लिया था ओर उसके साथ अक्सर देखा जान लगा था । मेनका के पिता सेना मे थे । उहाँने जब यह देखा व सुना तो इदिरा जी पर दबाव डाला कि सजय व मेनका का विवाह हो । उनके विवाह में परिवार के एक मित्र युनुस ने मुख्य भूमिका निवाही ओर अतत इदिरा जी के माँ की भूमिका मे थोडासा परिवर्तन हुआ ओर वह सास बन गई । भारतीय नारी जब सास बन जाती है तो शायद उरका यह ~~अन अनुभव था जाता है~~ ~~वही आधारी~~ है

अपनी अतिम परिणति मे  
 न तो हम मां, न पिता न पति  
 न पत्नी, न सतान ।

हम सबका है एक अलग अलग  
 निजी और एकाकी विश्व  
 हमे अपने कानून के सत्य

अपने ही गुणों के बीच जिंदा रहना है ।”

तो क्या माता पिता मूक दशक बने रहें ? नहीं जिंदगी इतना घासान,  
 नहीं हैं । हम अभिभावकों का बच्चे पर स्वयं अपने व्यक्तित्व की छाप  
 छोड़ने या उस पर अपनी इच्छाओं को लादने के लालसे बचते हुए उसका  
 सहृदयतापूर्ण मागदर्शन करने की बेहद पेचीदा और नाजुक जिम्मेदारी  
 निभानी पड़ती है ।”

इस उत्तरदायित्व को अकेले ही निभाती हुई इंदिराजी एक  
 सफल अभिभावक की भूमिका अदा करती रही । सन् १९४७ मे जब  
 भारत स्वतंत्र हुआ तो उन्होंने व उनके बच्चों ने बहुत गौरवावित  
 अनुभव किया क्योंकि उनके परिवार ने आजादी की लड़ाई मे मुख्य  
 भूमिका निभाई थी सितम्बर १९४७ मे वह बच्चों सहित मसूरी गई हुई  
 थी तो उन्हें फिरोज गांधी का फोन आया कि देहली मत आओ । कारण  
 यही था कि भारत विभाजन के कारण दंगे भडक उठे थे । फिरोज उन्हें  
 यह बतलाना नहीं चाहते थे । उनके स्वयं के शब्दों मे ‘मैंने समझा गरमी  
 के कारण ऐसा कहा जा रहा है । कोई और समाचार नहीं मिल रहा थ ।  
 मैं तरह तरह के सन्देशों से घिर गई । आखिरकार एक दिन फिरोज से  
 जो मेरे पिता के साथ थे, बात हो ही गई । उन्होंने कहा ‘और बातों के  
 अलावा, यहाँ हमारे पास खाने के लिए भी पर्याप्त सामग्री नहीं है और  
 आप बच्चों को यहाँ नहीं ला सकती’ । मैंने कहा “मैं अपने साथ डेर सारे  
 मालू से आऊंगी तब फिरोज ने कहा “हालात बहुत खतरनाक हैं” मैंने कहा

“यदि हालात खतरनाक है तब तो बचाव यहाँ छोले बैठे रहने के मुझे वहाँ पहुंचना चाहिए।” मैंने समान बांधा और रवाना हो गई। साथ में दो बोरी घास भी ले लिए। शाहदरा और देहली के बीच गाड़ी रुक गई। भ्रंका तो देला सोय किसी का पीछा कर रहे थे। मैं तुरन्त गाड़ी से उतर पडी और स्थिति पर नियंत्रण किया। मैं एक व्यक्ति को तो बचाने पर सफल हो गई।” अस्वस्थ होते हुए भी और दो छोटे बच्चों का साथ होते हुए भी इस प्रकार का आचरण करना उनके उसी स्वभाव का दिग्दर्शन करता है जिसका प्रारम्भ मे मा जिक्र हो चुका है, वह हैं उनके व्यक्तित्व का एक प्रनूठा प्रग, उनकी निर्माकता।

८ सितम्बर १९६० को जब उनके पिता की मृत्यु हुई, तो राजीव १६ वष के और सजय १४ वष के थे। नाना की मृत्यु भी २७ मई १९६४ को हो गई। अब बच्चे केवल अपनी मां के सम्पर्क में थी रहे। दून स्कूल व अन्य विद्वविद्यालयो में अपनी शिक्षा पूरी करने राजीव तो अपनी इच्छानुसार PILOT बन गया किन्तु सजय प्रारम्भ से ही चल प्रकृति के थे। श्री नेहरू के लिए भी और इन्दिरा जी के लिए भी स्वभाविकतया यह बहुत दु ख का विषय था कि वह दोनों जो आगएँ सजय से लगाए बैठे थे उसके प्रनुरूप उसका आचरण नहीं था। कई अमीरजादा व बडे V I P व्यक्तियों के बच्चे मिलकर देहली में मोज मस्ती उठाया करते थे उही में से सजय भी एक था।

सजय ने भी एक सिल लकी मेनका प्रानद को पसंद कर लिया था और उसके साथ अक्सर देखा जाने लगा था। मेनका के पिता सेना में थे। उन्होंने जब यह देला व सुना तो इदिरा जी पर दवाव डाला कि सजय व मेनका का विवाह हो। उनके विवाह में परिवार के एक भिन्न युनुस ने मुख्य भूमिका निबाही और अतत इदिरा जी के मां की भूमिका में थोडासा परिवर्तन हुआ और वह मास बन गई। भारतीय नारी जब सास बन जाती है तो शायद उसका वह ~~हल सम्भुक्त मा जाता है~~

जिसमें ममता कम प्रभुत्व अधिक रहता है। सोनिया विदेशी सदस्यी होने हुए भी इंदिरा जी ने अधिक समीप रही और इंदिरा जी अपने व्यस्ततम समय में भी अपने पोते राहुल व प्रियंका के लिए समय निकालती रही किंतु मेनका से प्रारम्भ से ही उसका बहुत अधिक सगाव नहीं था। हाँ सजय का पुत्र बरण उन्हें अवश्य ही बहुत प्रिय था।

छोटे बेटे की आकस्मिक मृत्यु इंदिरा जी के लिए एक त्रासनी थी। सजय को हवाई उड़ाना का शौक था और यदा कदा वह अपना स्वयं का हवाई जहाज दूर आकाश में ले जाता था और फिर गुनाधिग लाता रहता था। उस दिन नियति के हाथों अपने इसी खिलवाड़ में बह मारा गया। उनकी घनिष्ठ मित्र पुपुल जयकर इसी सम्बन्ध में लिखती हैं "छोटे बेटे की आकस्मिक मृत्यु ने उस पर जो आघात वह लगाए बड़ी थी, कुठाराघात था पर इंदिरा जैसी स्त्री में दुःख हताशा का रूप नहीं धारण करता। अपने छोटे पोते बरण से अलग होना उनका दूसरा बहुत बड़ा दुःख था पर वह उसे भी पी गई। मुझमें उठोने एक बार कहा था "पुपुल, दुःख बहुत गहरे जाकर मनुष्य के व्यक्तित्व पर फैल जाता है और तब वह मनुष्य के पूरे व्यक्तित्व का ही हिस्सा बन जाता है।" सजय की मृत्यु के बाद मैंने महसूस किया कि इंदिरा जी रातोंरात भीतर से बहुत बुजुग हो गई थी और इस बुजुगियत ने उनके व्यक्तित्व को एक बहुत बड़ी गहरी दार्शनिक प्रौढता दे दी थी।

सजय की मृत्यु के पश्चात् उठोने अनुभव किया कि जो आघात व आकांक्षाएँ उठे सजय से थी वह राजीव ही पूरी कर सकता है। राजीव राजनीति में नहीं आना चाहते थे किंतु सभी परामशकों के माँ के जोर देने पर उठोने अपनी पाइलेट की नौकरी छोड़कर राजनीति में प्रवेश किया। मेनका कुछ समय तक तो इंदिरा जी की आज्ञाकारी बहू बनी रही किंतु सफरज ग रोड उन्हें अधिक देर तक बांधे न रह सका। वह भी राजनीति में उतरना चाहती थी और सजय के मित्र उसे अपनी

ससग पार्टी बनागे के लिए प्रेरित कर रहे थे । यही से सास का बहू पर नियंत्रण और बहू का पारिवारिक परम्परा को छोड़कर बाहर घाने का भारतीय सास बहू का पुराना ऋगडा प्रारम्भ हुआ । सभी लोग यह चर्चा करने लगे कि इन्दिरा जी साधारण सास को भाँति ही बहू को घाने नियंत्रण में रखना चाहती है । किन्तु मेनका सभी बचपन तोडकर राजनीति में घाना चाहती है । "प्रतत मनका को 1, सफदरज ग रोड छोडकर जाना पडा । वह घटना भालोचना का बेड्र बनी और एक पुवा विषवा के रूप में जिसे सास ने घपने घर से निकाल दिया हो, मेनका ने सहानुभूति भी पाई । किन्तु यदि इन्दिरा जी के दृष्टिकोण से दखे, मेनका परम्पराओं का उनटा करना चाहती थी और पारम्परिक बचपन को तोडना चाहती थी । बहण का भी घपनी मा के साथ जाना उह बहुत अखरा क्योंकि सजय की मृत्यु के पदचात् वह बहण से बहुत प्रेम करने लगी थी । साधारण दादी के समान ही वह घपने पोते पोती से अधिक घुली मिली थी ।

इन्दिरा जी का सास का रूप मेनका के सम्बन्ध में ही भारतीय जनता के सामने घाया । उसके सफदरज ग छोडने के पदचात् से लेकर उनकी मृत्यु तक उहोने मनका को वह स्नेह नहीं दिया जो कि एक विषवा बहू को देना चाहिए । वह भी विद्रोही निकली । उनकी निजी सचिव उपा भगत लिखती हैं जो इन्दिरा जी के ममतामयी मा के रूप का चित्रण करता है । लोग ऐसा बगे समझने हैं कि अगर मां घर से बाहर काम के तो घाने बच्चो को मा का ध्यार नहीं दे पाती ? जो माएँ घर पर रहती है क्या उनमें वह से ज्यादातर दिन भर घर पर रहने के बावजूद घपने बच्चो से उदासीन नहीं रहती ? उनके मा के रूप को स्पष्ट चित्रित करत हुए वह लिखती है "मैंने खुद देखा है कि जब उनके बच्चे छोटे थे वे चाहे सिफ घाघा घटा उनके माघ दिताती पर वे क्षण इतने आत्मीय और निजी होते थे कि बच्चों को कभी भी मा की दूरी नहीं खलती थी ।"

प्रीसत मामा की तरह मैंने उन्हें सभी बच्चों के पीछे पड़ते नहीं देखा कि  
 ऐसा साधो वैसे सालों, ऐसा करो, वैसे करो, मैं प्रकृति देखती थी कि  
 फुगत मिलने पर दोनों बच्चों के साथ वे अपने कमरे में लेट जाती। उह  
 भगल भगल में ले लेती और उनसे बात करती रहती थी फिर किसी किताब  
 से पढ़कर उन्हें कुछ सुनाती रहती। अपने बेटे के बच्चों के साथ भी उनका  
 सहज पर किसी भी तरह का दिखावटी भावुकता से परे का बहुत सहज  
 और खुला रिश्ता था। जसा कि भवनर होता है बतौर दादी के उनका  
 अनुशासन अपने बेटे के बच्चों पर बहुत नरम था। कभी राजीव यदि खाने  
 की मेज पर बच्चों को अनुशासित करने का जरा सख्ती से कुछ कहते थे,  
 तो वे बड़ी नरमाई से धाड़े धा जाती। "पोते वरुण से विछुडना उहे दुख  
 दायी लगा। उपा भगत ही कहती है "उनके मन में एक गहरी कबोट जरूर  
 थी अपने छोटे पोते वरुण से न मिल पाने की। इस एक बात ने उन्हें बड़ी  
 तकलीफ पहुंचाई थी। पर जसा कि मेरा विचार है वह भावनाओं के  
 मामले में बहुत अनुशासित थी। उन्होंने इसको अपने तक ही रखा। बार  
 बार मेनका वादा करती कि बच्चे को भेजेगी पर फिर नहीं भेजती। इससे  
 सचमुच बहुत कष्ट होता था। इस बात की जरूरत से ज्यादा तूल देना  
 वे नहीं चाहती थी। अगर वह जिद करती तो शायद नतीजे में और अधिक  
 हल्ला-गुल्ला व कष्ट होता। वैसे मुझे हमेशा लगता था कि सचमुच इसमें  
 सबसे बड़ा नुकसान बेचारे बच्चे का ही हुआ है। क्योंकि दादी के प्यार की  
 सबसे ज्यादा जरूरत उसे थी। तमाम दुखों के बावजूद श्रीमती गांधी  
 अपना जीवन लगभग पूरा जी ही चुकी थी, पर उनके भीतर जो स्नेह था  
 उसे बच्चे के लिए, उससे उस मासूम को बचित करना उसके प्रति प्राण था।

५. सास के रूप में सोनिया ने व दादी के रूप में प्रिय का व रहुल  
 ने जो स्नेह इंदरा जी से पाया प्रभावशाली व अपनी जिद के कारण मेनका  
 उसको न पा सकी, और वरुण को भी उसने उसके स्नेह से बचित रखा।  
 जायदद के विषय में भी "यादालय जाना व सास-बहू की पारस्परिक

क्षीचातानी एक भालोचना का विषय रही है किन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् मेनका का उनके शव के पास रोना और यह कहना "मम्मी घाय मुझमे नाराज ही बिलुड गई" कहीं गहरे में भाकर मन को कचोटता है। गल्ती घायद दोनों की ही थी किन्तु इससे यह तो स्पष्ट हो गया कि इन्दिरा जो नारी क रूप में प्रायः साधारण नारियों से भिन्न नहीं थी।

### राजनेता के रूप में

इन्दिरा जी का चित्रण करते हुए सवप्रथम उनका जननेता का रूप ही सम्मुख आता है। उनका कहना था कि जीवन में उनका आदर्श पास की सत वीरागना जान-भाक आक थी। जान, जिसने ख ड खंड होते अपने देश को अपने साहस से पन्द्रहवीं शताब्दी के अघकारमय काल में एशिया और अखण्डता की डोर से बाधा था। जोन एक स्वप्नदर्शी थी और एक मोद्धा थी। फाल तो एक जुट हो गया किन्तु जोन को उहीं देशवासियों से भिन्न यातनामय मृत्यु दण्ड यह कहकर कि वह एक डायन थी। किन्तु बलिदान की चार सन्धिया बाद जोन को एक सत के रूप में स्थापित मिली। श्रीमती गांधी और जोन के जीवन में एक अद्भुत साम्य है दोनों ने नारी होते हुए भी एक स्त्री विरोधी आतावरण में अपने देश की अखंडता का स्वप्न देखा और उसे साकार किया। उत्तर में उन्हें मिला अपमान, भालो-चना और सदेह और दोनों ही जब स्वगवासी हो गई तो देश ने और दण्ड देने वाली ने अनुभव किया कि उन्हें क्या खो दिया। उ हैं खोने के पश्-चात् एसा लगने लगा कि राजनीति का मच अब उतनी सरलता से कौन सम्भान पायेगा। उनके मृत्यु के पश्चात् यू तो अमरुय अर्द्धाजलियो उनको मेंड की गई। अत्याधिक भावुकता से ही हृदय की सच्ची बातें उभर कर आती हैं। राजनेता के रूप में जो एक अर्द्धाजली उनके व्यक्ति को उभारती है वह है, भावू अर्द्धाहम की। उनके कथनानुसार

"believed for the last many years that she was one of the





कभी कभी हम सोचते सोचते और सपने देखते देखते सवाल करने लगते हैं कि माना हम भी उसी पुराने जमाने में चले गए हैं और उस पुराने जमाने के उन और बीरांगनाभा के समान हम भी बहादुरी का काम कर रहे हैं। क्या तुम्हें याद है कि जब तुमने पले पहल जान भाक भाक की कहाती पड़ी थी और तुम्हारे दिल में कितना है सला पैदा हुआ था कि तुम भी उसी की तरह कुछ काम करो। साधारण मर्दों और औरता में आमनीर पर भी साहस की भावना नहीं होती है महान नेताओं में कुछ ऐसी बातें होती हैं जो सारी जाति के लोगों में जान पैदा कर देती है और उनमें बड़े बड़े काम करवा देती है लगता है अपने पिता के इस उद्देश्य से इंदिरा गांधी को जन नेता बनने की प्रेरणा मिली और इन्हीं परों ने उनके ऐसे व्यक्तित्व को बनाने और सशरते में जीव का काय किया जो राजनेता के रूप में वर्षों पश्चात् जनता के सामने उभर कर आया। श्रीनेहरू ने १९३० में अपने एक और पत्र लिखा "मेरी बड़ी कामना है, तुम बड़ी होकर एक देश सेवक और एक बह दूर सिपाही बनो।" अपने पिता की कामना की पूर्ति इंदिरा जी ने पूरातया करने का प्रयास किया और उसके देश का बच्चा बच्चा परिचित है। पत्राचार पाठ्यक्रम तो वर्षों पश्चात् आया नेहरू जी ने अपनी पुत्री को पत्राचार द्वारा ही शिक्षा दी और ऐसी शिक्षा दी जिसने उन्हें अपने जीवन में जनमानस के नेता का पद प्राप्त करने में सफलता पा सका।

शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् १९४२ को उनका विवाह हुआ और वह भी ऐसे व्यक्ति से जिसकी आकांक्षा भी देश सेवक बनने की ही थी। अगस्त १९४२ बम्बई कांग्रेस अधिवेशन में अर्जो जो भारत छोड़ो का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुआ। वास्तव में यह प्रस्ताव अधिवेशन में भाग ले रहे युवा-वय जिनका इंदिरा व फिरोज गांधी भी थे की पहल थी जो कि अर्जो के पजे से भारत की आजादी के लिए किसी निर्णायक पहल के पक्षपाती थे। अगस्त १९४२ को यह प्रस्ताव पारित किया

great leaders of our time, greater than Winston Churchill De Gaulle or Fidel Castro, She was certainly more versatile, had broader interests and tastes than them"

(H Times Sunday Magazine Nov 14, 1984)

राज्य प्राप्त से ही इंदु प्रियदर्शिनी के सम्मुख था स्वतन्त्रता सधम से निरंतर राष्ट्रीय चरित्र धीरे धीरे अपने जीवन का बौद्धावर करने वालों का साहित्य । उन सबके प्रभाव से देश प्रेम से निश्चित एक छोटा सा बीधा धान द भवन के प्रांगण में बसा होने लगा । महान् पितामह व पिता ह्यु विद्वधी माना, रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे गुरु कर साम्रज्य पिता व पितामह द्वारा बार बार जेल जाना व देश के प्रति घातमोत्साग, इस मय परिवेश में इस बीधे को ऐसा सींचा कि वह प्रागे चलकर विदन की एक योग्य सा, सी धीरे प्रसर युद्धि प्रधान मंत्री की सत्ता वा सकी । महात्मा गांधी जैसे सत्तो का माग दशन वा उहोंने जो मानर सेना का नेतृत्व किया वही उनके राजनेता बनने की जते नीचे बन गई ।

इंदिरागांधी मे परिस्थितियों से जूझने की धीरे सतरोँ का सामना करन की अद्भुत समता थी । जो उह भारत की सबसे बडा व प्रिय जन नेता बनने मे सहायक हुई । इ ही गुणों का प्रभाव उनके स्वभाव पर स्वाभाविक ही था । फलस्वरूप वह एक ऐसी नेता बनने जो प्रत्य त महत्व कांसी जीवट मरी व जिद्दी स्वभाव की थी । ऐसा प्रती होता है कि मह स्वकाशा व जीवट के सक्षण उनमे बचपन से ही प्रकट होने लगे थे । इसका प्रमाण जवाहरलाल नेहरू की Glimpses of world History नामक पुस्तक मे मिलता है जो उोंने नैनी सेट्टन जेन से १९३० मे इंदिरा प्रियदर्शिनी के नाम पत्रो के रूप मे लिखी थी । इन पुस्तक में पहले पत्र के रूप में वह लिखने हैं "इतिहास ही किताबों मे हन राष्ट्रों के जीवन मे बीतने वाले बडे बडे जमानों की व महान पुरुषों की धीरे महिलाओं का हाल धीरे उनके शानदार करनामा की कहानिया पडने ही रहते है ।

कभी कभी हम सोचते सोचते और सपने देखते देखते खमाल करने लगते हैं कि मानो हम भी उसी पुराने जमाने में चले गए हैं और उस पुराने जमाने के उन और धीरागनाओं के समान हम भी बहादुरी का काम कर रहे हैं। क्या तुम्हें याद है कि जब तुमने पहले पहल जान भाफ भाक' की कहानी पढ़ी थी और तुम्हारे दिल में कितना है सला पैदा हुआ था कि तुम भी उसी की तरह कुछ काम करो। साधारण मर्दों और औरतों में सामान्य पर भी साहस की भावना नहीं होती है महान नेताओं में कुछ ऐसी बातें होती हैं जो सारी जाति के लोगों में जान पैदा कर देती है और उनमें बड़े बड़े काम करवा देती है लगना है अपने पिता के इस उद्गोधन से इन्दिरा गांधी को जन नेता बनने की प्रेरणा मिली और इन्हीं परी ने उनके ऐसे व्यक्तित्व को बनाने और सभारने में नींव का काम किया जो राजनेता के रूप में वर्षों पश्चात् जनता के सामने उभर कर आया। श्री नेहरू ने १९३० में अपने एक और पत्र लिखा "मेरी बड़ी कामना है, तुम बड़ी होकर एक देश सेवक और एक बहु-दूर सिपाही बनो।" अपने पिता की कामना की पूर्ति इ दिग्गज जी ने पूरातया करने का प्रयास किया और उसके देश का बच्चा बच्चा परिचित हैं। पन्नाचार पाठ्यक्रम तो वर्षों पश्चात् आया नेहरू जी ने अपनी पुत्री को पन्नाचार द्वारा ही शिक्षा दी और ऐसी शिक्षा दी जिसने उह आगे जीवन में जनमानस के नेता का पद प्राप्त करने में सफलता पा सकी।

शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् १९४२ को उनका विवाह हुआ और वह भी ऐसे व्यक्ति से जिसकी आकांक्षाएँ भी देश सेवक बनने की ही थी। अगस्त १९४२ बम्बई कांग्रेस अधिवेशन में अ प्रोजे भारत छोड़ो का ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित हुआ। वास्तव में यह प्रस्ताव अधिवेशन में भाग ले रहे युवा-वर्ग जिनका इन्दिरा व फिरोज गांधी भी थे की पहल थी जो कि अ प्रोजे के पजे से भारत की आजादी के लिए किसी निर्णायक पहल के पक्षपाती थे। ८ अगस्त १९४२ को यह प्रस्ताव पारित किया

गया और अगले दिन सुबेरे चार बजे के लगभग जवाहरलाल नेहरू गिरफ्तार कर लिए गए। कांग्रेस के अध्यक्ष बड़े बड़े नेता भी जन के किसी तरह का मद कर दिए गए। पुलिस इंदिरा व फिरोज गांधी को भी पकड़ना चाहती थी पर वह श्राव नहीं पाए। वेग बालर वह किसी प्रकार इलाहाबाद चले गए। कुछ दिनों बाद भारत रोमांचक लगे मनव दम्भति एक साथ गिरफ्तार कर लिए गए।

उन दिनों फिरोज गांधी भूमिगत रहकर कांग्रेस पार्टी का काम करते थे। उन्होंने अपनी दाढ़ी बढ़ा ली और सादी के कपड़े पहनने लगे। उन्होंने सफेद के स्थान पर चटकर ग के कपड़े ही पहने लिए जिसे उन्होंने उह एग्लो इण्डियन युवक ही समझने का भ्रम होने लगा। इंदिरा और फिरोज उन दिनों ऐग भिन्न के घर पर मिलते थे जिनका राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं होता था। कारणवश उन पर पुलिस की निगाह नहीं होती थी। पर तु पुलिस के मुलाखिर सभी जगह मौजूद रहते थे। कोई भी क्षण खतरे से खाली नहीं था। फिरोज दम्भति पुलिस भी गिरफ्तार में न आने का भरसक प्रयत्न करते रही।

सभी एक दिन जेल से इंदिरा को जवाहरलाल नेहरू का एक महत्वपूर्ण सदेश मिला। उसको जनता तक पहुँचाना अत्यंत आवश्यक था। सदेश को पोस्टरों पेम्फलेटों आदि के द्वारा पहुँचाना सम्भव न था। अतः कांग्रेस कार्यकर्त्तों की एक सभा बुलाई गई। सावधानी के बावजूद भी पुलिस को इसकी मजक पकड़ गई व जैसे ही कार्यकर्त्ता नेहरू जी का सदेश जानने की इच्छा ही एकत्रित हुए निश्चित समय पर इंदिरा जी किसी छिपे स्थान से अचानक ही निकल आईं। वे सदेश की भूमिका बरा ही रही थी कि एकाएक में मेरे कांग्रेस सैनिकों ने बठक के स्थान को घेर लिया। इंदिरा जी के वक्तव्य से कांग्रेस सैनिक उत्तेजित

ही ठे और उन्होंने चारों ओर राईफल बजा ली। एक राईफल को दूरी हो उनके सिर से बीच ही गई ही थी चारों ओर की हुई सफलता से भी इंदिरा विचलित नहीं हुई वे अपना मार्ग बराबर करती रहती। तभी एक अंग्रेज सैनिक ने उन्हें मगोन से छू दिया। इंदिरा जी के स्वयं के शब्दों में "मने अपने छिपने की जगह से निकल कर मापण घुस किया ही था कि बहूके ताने सिपाही हमारी ओर लटक पड़े। हमें चारों ओर से घेर लिया गया और एक सिपाही सगोन तानकर मेरी ओर बढ़ा। उसकी सगोन मेरी जिस्म से छूने लगी थी। दूर छज्जे पर सड़े फिरोज यह देख रहे थे। वे वेहद उत्तेजित हो उठे। भूल गए कि वह भूमिगत है। वे सीधे मरे पास आए। उस सिपाही से बोल या तो बहूफ हटाओ या भाग जाओ। हम सभी को गिरफ्तार कर लिया। जेल की गाड़ी की ओर मुझे ले जाने के लिए साजेंट ने मेरी बोट पकड़ने की गलती कर दी। लीगो ने हम चारों ओर से घेर लिया। कुछ महिला कायकत्ताओं ने भी मेरी बहू पकड़ ली। दोनों ओर की खीचतान में मैं इस तरह फस गई थी कि पल भर के लिए लगा कि शरीर फट जायेगा। पुलिस की गाड़ी में जेल तक का सफर एक भसाधारण अनुभव था। गाड़ी में बठे पुलिस सिपाही मेरी बातों से इतने मर्माहित हुए कि उन लीगो ने अपने किए की माफी मागनी शुरू कर दी। उन्होंने अपने साफे मेरे कदमों पर रख दिए। इनमें से कुछ तो दुख से रो पड़े, बोले हम क्या करते? नौकरी का फज था।"

(जीवन के कुछ पृष्ठ से)

फिरोज व इंदिराजी दोनों को यह आशा थी कि 'कर्म' से कम सात साल तो कृष्ण भवन में ही बिजाने पड़ेगे परंतु ६ माह बाद १३ मई १९४३ को इंदिरा जी को छोड़ दिया गया। उस कष्ट व यात्रा के स्मरण करते हुए इंदिरा जी स्वयं लिखती हैं "एकाएक ही जेल से छूटने

पर ऐसा अनुभव हुआ मानो मैं किसी मयकार भरे माग से एकाएक ही बाहरी प्रकाश में आ गई हूँ । जीवन के वेग से चक्काचोंप रह गए रंगों, धाकागों, विचारों और ध्वनिमों की विविधता ने मुझे चक्काचोंप कर दिया।”

अगस्त १९४३ में फिरोज को भी छोड़ दिया गया । कुछ दिन बाद आनन्द भवन में नेहरू परिवार के आग्रह पर फिरोज गांधी व इंदिरा गांधी रहने लगे जो 'स्वराज्य भवन' कहलाकर आजादी के आंदोलन का केन्द्र बन गया । जब से लेकर ३१ अक्टूबर १९६४ तक अर्थात् मृत्यु तक इंदिरा जी जन मानस पर छा गई और जन नेता व देशमाया के रूप में प्रसिद्ध हुईं । इंदिरा गांधी अब इतिहास की वस्तु बन गईं । जब हम अपने आठ भूतकाल की ओर नजर डालते हैं तो यह अनुभव भारत के प्रत्येक दश-वासियों को होता है कि उन्होंने देश को जिन दुर्लभता पर पहुँचाया वह कुछ वर्ष पूर्व तक बल्पता भी नहीं थी । वैजगाड़ी के युग से भारत छलांग लगाकर अणुबम और अंतरिक्ष युग का देश बन गया । १९६६ में अगले १५ वर्षों की अवधि भारत के लिए महान उपलब्धियाँ की अवधि रही है वैज्ञानिक उपलब्धियों सर्वाधिक नहीं और इसका कारण रहा है भारत को इंदिरा गांधी जैसे नेता का नेतृत्व । श्रीमती गांधी का राजनीति वर्चस्व, उनका काम करने का एकत्रित तरीका और अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच पर जाण्वल्पमान सितारों की तरह कौंधते हुए तपस्या । उनकी सफलताओं ने उनकी वैज्ञानिक उपलब्धियों को आच्छादित भले ही कर दिया हो किंतु भारत को विज्ञान के क्षेत्र में उनकी देन को कम करके नहीं देसा जा सकता । भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का काय क्षेत्र होने का गौरव राजस्थान को भी मिला । जब देश का पानी पर आधारित अणुशक्ति सयंत्र चालू हुआ तो वह जोटा के निकट राणा प्रताप सागर बांध पर ही बना । इसकी पहली इकाई ने १९७३ में अपना व्यवसायिक बिजली

उत्पादन प्रारम्भ किया। राजस्थान नहर परियोजना (जिसे प्रमथ दिरा नहर परियोजना के नाम से जानी जाती है) राजस्थान की रेतीली बब जर धरती के लिए हेरियाली व खुशहली की वरदान लेकर आई है।

इदिरा गांधी ने १८ मई १९७४ को लाख विरोध के बावजूद भी प्रथम अणुविस्फोट कर भारत के साथ राजस्थान को भी विश्व के प्राणविक मानचित्र पर अंकित कर दिया है। उनके इस भूमिगत प्राणविक परीक्षण का विरोध विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय अणुशक्तियों ने ही नहीं किया था बल्कि देश में भी ऐसे कतिपय तत्व थे जो उनके इस साहसिक अभियान की आलोचना करते रहे। किंतु उन्होंने दृढ़ निश्चय तथा साहस का परिचय देते हुए यह सिद्ध कर दिया कि भारत न केवल एक अणुशक्ति वाला देश है बल्कि वह शक्तिपूर्ण कार्यों के लिए इच्छा उपयोग करने की तकनीक में भी दक्ष रहता है। यह भी दिवा दिया कि भारत अपनी अणु नीति किसी के दबाव व प्रभाव में आकर नहीं, राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है। अणुशक्ति सम्पन्न देशों ने उन पर कई तरह के दबाव डाले। राणाप्रताप सागर अणु सयंत्र के लिए पानी देो से इनकार कर दिया। परिरुकुत यूरेनियम भेजने के भी करार किए हुए देश मुकर गए पर श्रीमती गांधी ने कहीं भी कमजोरी नहीं दिखाई और राष्ट्रीय हितों व स्वाधीनता में निणय लेने की क्षमता की कीमत पर कभी समझौता नहीं किया। पश्चिम अणुशक्ति सम्पन्न देश चाहते थे कि भारत अणुशक्ति नियंत्रण समझौते पर हस्ताक्षर करदे और अपने प्राणविक कार्यक्रमों को अन्तर्राष्ट्रीय देखरेख के लिए खुला रखे जबकि वे देश स्वयं ऐसे किसी प्रतिबन्ध को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। परन्तु श्रीमती गांधी स्पष्टतः इन सब शक्तियों को बताती रही कि वह इन करारों को मानने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं है। जिसमें कुछ देशों को दूसरे से अधिक अधिकार या मनमानी करने की स्वतंत्रता दी गई हो।



धीरे इस प्रकार जातिपूर्ण गावों के लिए मनुष्यशक्ति के विकास और उपयोग में भारत में अपनी स्वतंत्र प्रथा कायम रखी। इसका सारा श्रेय इंदिरा जी के नेतृत्व को जाता है।

श्रीमती इंदिरा गांधी के शासन काल में ही भारत ने उपग्रह युग में प्रवेश किया। प्राथमिक मास्कर और भारतीय उपग्रहों की श्रमला की अपनी श्रमला कहानी है किन्तु १९७५ में अमेरिकन 'नासा' अंतरिक्ष एजेंसी के सहयोग से भारत के गावों में दूरदर्शन का प्रसारण पहुंच कर एक नई संचार क्रांति का प्रारम्भ किया जो अपने आप में भारत के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन कार्यक्रम के अंतर्गत एक घण्टी की अवधि के लिए अमेरिका उपग्रह की सेवाएँ प्राप्त कर उसके माध्यम से देश के लगभग २४०० गावों में जहाँ यह प्रसारण कल्पनातीत था, दूरदर्शन के माध्यम से कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण व समाजशिक्षण के शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित करने का अभिनव प्रयोग किया गया।

सौभाग्यवश देश के ६२ ज्यों के लिए किए गये प्रयोगात्मक प्रसारण का लाभ राजस्थान के चार सौ गावों को भी मिला तथा कोटा सवाईमाधोपुर और जयपुर जिले के सुदूरस्थ गावों के निवासी इससे लाभान्वित हुए। राजस्थान में दूरदर्शन का यह पहला प्रयोग था और गाववासी महाभारत काल में सत्रय द्वारा अपने राजा अंतराष्ट्र को आला देखा हाल बतलाते हुए व अथ पौराणिक चमत्कारी को अपने सामने अपने ही गाव में देखकर चमत्कृत थे। ग्रामीण क्षत्रा की छाटी, छोटी शालाओं में वैज्ञानिक शिक्षण तो क्या, जहा टाट-बट्टी भी बैठने के लिए उपलब्ध नहीं थी, दृश्य अथ माध्यम से बालकों को विज्ञान की शिक्षा देने का प्रयोग भी बहुत सफल रहा। और उसी से प्रभावित होकर इंदिरा जी ने दूरदर्शन का देश के गाव गाव में प्रचार व प्रसार करने की योजना को क्रियान्वित करवाया। अब 'नासा' उपग्रह की तरह इ-६८ १ को भारतीय उपग्रहण का

उद्योग किंग ज र्टा रे जा ग केवन दरदशन व टेलिकोन जैसे सचार मायमो मे वचिक र्थायी और प्रद्विरणीय अध्ययनो मे भी बहुत उप-  
 योी गिय हो रहा है। राभी मूल्यु तर इदिरा जी ने सम्पूर्ण भारत मे  
 दरदशन के लगभग १०० के र स्तिति कर दिऐ गिनके द्वारा उननी  
 म्यु पश्यत भी लगभग माने भारत भी जनता मनने दिवगत नेता के  
 गतर कर सकी। व्यग म क्के गोरत दरदशी री इदिरा दा के नाम  
 से पुगाने लगे थे। ि तु उ रंभे ता कषा स्वय इदिरा जी ने कभी  
 पल ना न गी हीनी कि जिन दरदशन नेत्री को रीसतन ए प्रतिदिन के  
 द्विग व त हर प्राग व दश के हर रीने म तुलवाने का उपनम वह करवा  
 रही थे वह उनी म्पुग। उनो दशन करवाकर उनो दगाय बठे  
 हुए अनेकानेक भारतीय के मूल्य पर उनी का नो और सुदृढ कर  
 देता। विश्वव है कि उरु से भारतवासियो ने केशल इमी दरदशन के  
 माध्यम से प्र ती दि गत नेता के दशन िए ष उननी अतिम याग म  
 भाग लिया। इदिरा गहर ओ महानुभूति से भी थी का लाभ  
 पत्रो (इ) को लोकसभा चु गने भारी बहुमत प्राप्त करके मिला  
 और इनका सबसे बडा करत र्ता दरदशन जिन पर तीग दिन त  
 लगाता भारतीय। जनता प्रपनी दिवगत नेता के दशन करती रही।

कमर इदिरा गाधी पर सोवियत सघ के गति अदिक सम्मान  
 का आरोर लगाया जाना है किन्तु यह भुला गिया जाता है कि राष्ट्र हिन  
 को सर्वोपरि मानतर जिस दिगा से नी सहयोग मिला उसे ही उ हान  
 अपने कायक्रमो की निया वचि के निऐ स्वीकार किया। आरम्भिक उपग्रह  
 सम्बन्धी प्रयागो के लिए उा उ होने अमेरिका की मिसित तकनीक का  
 सहारा लिया वहा भारतीय उपग्रह छोडने तयार भारतीयो को अंतरिक्ष  
 में भेजने के वाप मे सोवियत रस को अपना सहयोगी बनाया। सोवियत  
 रस के सहयोग से दो भारतीयो राकेश शर्मा व रवीश मन्श्रीवा को यात्रा  
 के लिए प्रशिक्षित करने और अंतर मे राकेश शर्मा को प्रथम भारतीय ही

नहीं प्रथम एशियायी यात्रा का गौरव बिगारे में इन्दिरा जी का सहयोग व प्रेरणा की भूमिका मुग्य रही । सभी अघातम समय में से भी कुछ समयनिराल कर इन्दिरा जी ने प्रारम्भ में पून रहे रातेत गना से बड़ी मनोरंजक बातचीत की जो हम बात का प्रतीक है कि उन्हें इस अभियान में कितनी रति थी । क्या उपलब्धि हुई ? यह प्रश्न कई पूछते हैं । और पूछेंगे भी कि तु उत्तर यही है कि प्रारम्भिक उपलब्धिया का जायजा लेने पर भी हिमासय भी ऊघाईया की छूनी नजर नहीं आती है । क्या हर भारतीय के लिए यह यम गौरव की बात है कि हम में से एक विदय की परिधि से परे अंतरिक्ष की यात्रा का प्रवसर प्राप्त कर चुका है । जबकि हमारे अम पड़ोसी देश या तीसरी दुनिया के लोग इसकी कल्पना भी नहीं कर पा रहे थे ।

अन्तरिक्ष की नही, समुद्र की गहराइया में भी भारतीय वैज्ञानिकों न खोज की मुह्रान की । श्रीमती गांधी ने दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में भी भारतीय अभियान दल भेजने की पहल दिखाई । और उ ही की प्रेरणा से वहा हमारे वैज्ञानिकों ने एक स्थायी प्रयोगशाला स्थापित करने में सफलता पाई ।

विज्ञान व नई तकनीक का देश के विकास कार्यो में उपयोग करने की नीति का प्रारम्भ तो प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू के समय में ही हो गया था । मार्च १९५८ में समद ने एक प्रस्ताव द्वारा इस नीति पर अपनी मुहर लगा दी थी किंतु श्रीमती गांधी ने विज्ञान व तकनीक का एक स्वतंत्र विभाग ही कायम कर दिया व उसका प्रसार भी करने पास रखा । यह सिद्ध करता है कि देश की प्रगति को वैज्ञानिक आधार देने के लिए वह कितना महत्व देती थी परंतु श्रीमती गांधी ने भारत की मूल संस्कृति और महिमा को आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से घूमित नहीं होने दिया । उनका सदा ही पयास रहा कि विज्ञान का प्रयोग देश की गरीबी और अज्ञान को दूर करने के लिए ही किया जावे । आणविक

परीक्षण भी केवल उहोने देश के निर्माण कार्यों में सहायक के रूप में उपयोग करने के लिए किया। विश्व के भाग्य देशों की तरह सहायक साधन के रूप में नहीं किया।

इंदिरा गांधी शांति की साधना तो थी ही शक्ति व दृढ़ता की भी प्रतिमूर्ति थी। अपने प्रधान मंत्री काल में उहोने एक के बाद एक ऐसा कदम उठाया जो कि साहसिक था व सराहनीय रहा। राजाजो के प्रिवीपस खत्म कर दिये, बंका का राष्ट्रीयकरण कर दिया और मोरार जी को मंत्री मण्डल से निकाल दिया। इस प्रकार उहोने नेतृत्व की व्यक्ति परक लड़ाई को विचारधारात्मक युद्ध में बदल दिया। वह गरीब जनता की मशीहा बन गईं जिनके प्रतिशील गांधी के पहिदा की सत्ता के सूखे पुराने पथी नेता रोकन का प्रयत्न कर रहे थे। ३ मई १९६६ को जाकिर हुसैन की मृत्यु के बाद, सिन्धीवेट ने इंदिरा गांधी को भुक्ने के लिए सजीव रंढी का नाम राष्ट्रपति पद के लिए प्रस्तुत किया किंतु इंदिरा जी ने उन्हें पद मीका नहीं दिया, और रंढी के नाम का अनुमोदन कर दिया। उहोने 'प्रतरात्मा की भावाज' के अनुसार बोट देने और पार्टी अनुशासन से मुक्त होने को अपना अधिकार माना। फलस्वरूप सजीव रंढी पर गए और केवल इंदिरा जी के समयन के कारण प्रतिपक्ष के भी बी गिरी राष्ट्रपति बन गए। कांग्रेस में फूट पड गई। कांग्रेस के अध्यक्ष जगजीवनराम व निजलिगप्पा की अल्पमन कांग्रेस सगठन कांग्रेस कहलाने लगी और ७ई कांग्रेस पर इंदिरा गांधी का एक छत्र राज हो गया। युवा नेतृत्व की प्रतीक से घाने बढकर वह देश के मजदूर किसानों और शोपित-पीडिता हरिजनता की नेता होने के अतिरिक्त मुस्लिम और ईसाई अल्पसंख्यका की नेता के रूप में उभरी। इस स्थिति का उहोने पूरा लाभ उठाया और लोक सभा का चुनाव १४ महीने पहले करा लिया जिसमें ५२५ में से ३५० सीटें उनकी पार्टी को प्राप्त हुई। चुनाव जीतकर उहोने 'गरीबी हटाओ' को लेकर

श्रमने विरोधियों को चारा गाने बिन कर दिया । १९७१ म बंगला देश के मुक्ति आ दालन को सफल बनाया और पाकिस्तान हमले को कुठित किया जिसमे उनकी छवि में चार पाद लग गए ।

बंगला देश व पाकिस्तान युद्ध ५ प्राक्क दुष्परिणाम प्रकट होने लगे । १९७३ मे महामई १३% व १९७४ म २७% बढ़ी । इसक साथ ही प्रशासन व नेताओं मे गण्टाचार बढन क बिह भी प्रकट होने लगे । इस स्थिति के विरुद्ध गुजरान के छात्रों के गय निर्माण आ दालन की सफलता से प्रतिपक्ष म बडा आत्मविश्वास पडा हुआ । बिहार सरकार को हटाने के लिए मधुगिस्ता न गी आ दोन छे टिया । इस स्थिति म पुराने बयोबद्ध नेता जय प्रकाश नारायण बूढ़ पडे और प्रतिपक्ष म एवता स्थापित करन मे सफल हुए । इस मध्य सत्ता पक्षि: आलोचना का विषय रहा इंदिरा जी के पुत्र सजय की मादति पार की योजना तथा उससे लिए हरियाणा सरकार से भूमि प्राप्त करने से रोकर धन जमा करने व हयक डा का प्रयोग । इस आलाचना को इंदिरा जी । अपनी सत्ता क लिए चुनौती नमभा हालाकि पयवेधको के सामने स्पष्ट वा हि आम जनता इसन लिए उन्हें "ही कि ही अष्ट मंत्रिण और अफसरों की जिम्मेदार समझती थी ।

इस बीच इलाहाबाद हाईकोर्ट का १२ जून १९७५ का फैसला बम की तरह पट पडा जिसमे उनके चुनाव की विहा अयमितताओं के कारण अवैध करार दिया गया था । प्राप्त प्रमाणों के कारण कहा जा सकता है कि इंदिरा जी पद से इस्तीफा द जनता की अदालत म व उर्बोच्च मायालय मे फैसला हासिल कराना चाहती थी कि तु उनके पुत्र सजय तथा अन्य सलाहकारों ने 'एमरजे सी सागू करने व पिदली तारीख से सविधान में सशोधन करके उ हैं अपनी गन्दी बचाने की सलाह दी । प्रतिपक्ष के नेता जेल मे डाउन दिए गए । नीचे के स्तर के कामकर्ताओं को असत्य माननाएँ दी गई और गहरा को सुदर बनाने तथा परिवार निशोजन क

लिए मजदूर बरों के दृष्टि से इतनी जोर जबरदस्ती की गई कि जब १९७७ में 'एमजे सी' टूटाई गई तो चुनाव बरवाने पर न केवल कांग्रेस बहुरूप भी चुनाव हार गई। वास्तव में इंदिरा गांधी ने ताजमहाल प्रवृत्तियां बाज रूप में खेरा स रहा। १९७५ में 'एमजे सी' लागू कर उ हाने अपनी सत्ता तो बचा कि तु जनता के प्रति जनकी अगाध आस्था को उतक मत मरिच्छन व किसी बाने में री। यह विदरवास करने का आधार है कि अगल समय उनके पुत्र सजय ने तथा रिद्ध ५ अवर रय तथा ए वं सत जेने प्रसिद्ध वलीलो और अय चाटुकाराने उ ह सत्ता बचाने के लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले का उलघन करने की सलाह न दी हानी उसकी जनत व के खयवा अरु रूप न वताया जाता तो वह निश्चित ही इस्तीफा दे देता। सजय ने यहा बात अपने मित्रा में रबीवार की थी।

भारती के अतिरिषो और हुर्ही की लडाई के कारण जनता पार्टी के टूटने और १९८० में इंदिरा गांधी की सत्ता में पुन वापसी को सजय अपनी जीत बताता "हा। सजय ने 'दुया कांग्रेस' के रूप में मजदूर संगठन बनाने का इच्छा किया। और अग एन विमान दुघटना में उसकी मृत्यु न हुई हाजी तो कांग्रेस (२) का क्या रूप होता महा मही जा सकता। इसके पश्चात् इंदिरा जी ने अपने बड़ पुत्र राजीव की उत्तराधिकारी के रूप में पदा किया मगर इस वार पूरा सावधानी के साथ। महत्वपूर्ण प्रश्नों पर निश्चय उ हाने अपने हाथ में ही रहे। राजीव राजनीति में धान को बहुत इच्छुव नहीं थे किंतु मां के आज्ञाकारी पुत्र के रूप में सजय से भिग उनकी छवि जन मानस पर बनरा। हो सकता है कि उनके दागों पुत्रा व स्वभाव में महान अंतर का भी पभाव रहा हो। उ हाने मात्र संधी व हमारी परम्पराएं पुर्जीवित करने का प्रयत्न किया जिससे उग संगठन की जड़ें मजबूत हो व पार्टी की जनता या समर्थन मिले। और स्वयं उ ह जनराष्ट्रीय प्रणसा व रयाति मिले। सक्षेप में यह परम्परा भी मजदूर विसाग जाता की सेवा जिसके लिए उहोंने २०

शासन के दौरान भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपनी मानवान दाना पर धरती रही। सत्रप गांधी की मृत्यु उनके बड़े बड़े सत्रनों को बरा-शापी पर गर्द कि तु उस सदम को भी बड़े धीरज व साहस से सहकर जिस दुःखता और हिम्मत पा परिषद दिया यह दुल म है।

इंदिरा गांधी प्रथ इतिहास की वस्तु बन गई है। जब हम अपने भूतकाल की ओर तजर डालने हैं तो यह प्रामुख्य भारत के प्रत्येक देशवासी को होता है कि उन्होंने देग को जिग बुनदियों पर पहुँचाया यह कुछ वष पूव एक वल्पनातीत भी नहीं थी। बलगाडी के युग से भारत क्षणाग लगाकर घणुग्रम और प्रतरिदा युग का देश बन गया १९६९ से प्रगले १५ वर्षों की प्रवधि भारत के लिए वैज्ञानिक उपलब्धियों की प्रवधि रही है इनका कारण रहा है भारत को इंदिरा गांधी जैसे नेता का नेतृत्व। श्रीमती गांधी का राजनतिष वचस्व, काम करने का एकानिष्ठ तरीका और प्रतराष्ट्रीय रग मच पर जांगवल्पमान सितारेकी तरह उनकी कौंध जँधी उनकी सफलताओं ने भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों से प्राञ्छादित भले ही कर दिया हो पर भारत को विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उनकी देग को विधी भी प्रकार कम करके नहीं देखा जा सकता। भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का बाय क्षेत्र होने का गौरव राजस्थान को भी मिला। जब देग के भारी पानी पर प्राचारित घणुशक्ति समग्र चालू हुआ तो वह कोटा के निक्ठ राणा प्रताप सागर बाध पर ही बना। इसकी पहली इकाई ने १९७३ में अपना व्यवसायिक बिजली उत्पादन प्रारम्भ किया। राजस्थान नहर परियोजना (जो प्रथ "वरदान पिद्ध हुई है और एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इंदिरा गांधी ने १८ मर्च १९७४ को लाख विरोध होने के बावजूद भी प्रथम घणु विस्फोट कर भारत के साथ राजस्थान को भी विश्व के घ्राणविक मानचित्र पर अकित कर दिया है। उनके इस भूमिगत घ्राणविक परीक्षण का विरोध विश्व की अतराष्ट्रीय घणुशक्तियों ने ही नहीं किया था बल्कि

सूत्री कार्यक्रम तैयार किया और घम निरपेक्षता जिसके लिए उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भाव बनाये रखने के लिए बराबर काम किया। साम्प्रदायिकता का विरोध तथा राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्रामों का समर्थन जिससे उन्होंने १०१ राष्ट्रों के गुट निरपेक्ष संगठन तथा आन्दोलन में अत्यन्त सम्मानित स्थान मिला और अपने अन्तिम दिना में वह गुट निरपेक्ष राष्ट्र सम्मेलन की अध्यक्ष चुनी गई। यह इन बातों का चिह्न था कि विश्व शांति की रक्षा और देश की राष्ट्रीय स्वतंत्रता के पक्ष में भारत की आवाज दिना दिन अत्यन्त प्रभावशाली होनी जा रही थी।

श्रीमती गांधी ने विश्व क्षेत्र में भारतीय प्रतिष्ठा को जितना ऊँचा उठाया उतनी ही अर्थिक यह स्वयं ऊँची उठ गई और दुनिया के दो क्षेत्रों के संधि में हर सेमा उन्हें अपनी और पीछे का प्रयत्न करता रहा। कुशल राजनीति की तरह वह किसी भी सेमा का विशेष समर्थन नहीं करती रहीं जिससे कि वह सेमा विश्व शक्ति संतुलन में भारी न बैठ सक और उनकी गुट निरपेक्ष नीति विश्व शांति की रक्षा के लिए निराला-कारी तत्त्व बन गई।

इस बात के सभी लोग कामल हैं कि इतिहास गांधी में परिस्थितियाँ से जूमन और सतरो का सामना करने की अद्भुत क्षमता थी। इसके कारण से उनकी महत्वाकांक्षा उनके जीवित और उनके जिद्दी स्वभाव। उनके राजनीतिक जीवन में इसके अत्यन्त प्रमाण मिलते हैं। जिसका अर्थ भी बखाना किया गया है। सबसे पहले अपने पिता नेहरूजी की सलाह की परवाह न करने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से केरल सरकार का तस्कन चलवाया। १९६६ में उन्होंने कांग्रेस के बड़े बड़े दिग्गजों को अगुआ दिखाकर कांग्रेस के दो टुकड़े कर दिए। और संगठन पर कब्जा कर लिया। बंगला देश को मुक्त कराने के लिए अपनी कीर्ति भेजकर उन्होंने भारी जोखिम उठाई थी। १९७५ में उन्होंने इलाहाबाद हाइकोर्ट के फैसले को सर्वोच्च न्यायालय में सशोधन करके ठोकर मार दी। जनता पार्टी के



१९४७ में भी अपने अतिरिक्त तत्त्व थे जो हमारे इस महसिद्ध श्री यान की  
 व योजना करते रहे। विस्तृत होने के लिए निश्चय तदा साहज्य पर परिचय  
 देन हुए यह सिद्ध कर दिया कि भारत का विकास एक समुदायिक यातायात का  
 है वस्तु यह परिष्कृत कार्यों के लिए इसका उपयोग करने की तकनीक  
 भी देना पड़ता है। यह भी सिद्ध किया कि भारत में अनेक अनेक  
 विचारों के द्वारा प्रभावित प्रभाव - ही राष्ट्रीय विचारों को हमने अनेक  
 निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है। अनेक विचारों के द्वारा उन पर यह  
 तरह के प्रभाव डाले। यह प्रभाव अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 मनाएँ दिए। अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 पर श्रीमती गांधी ने भी अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 स्वाधीनता से निरास होने के क्षणों की भीमता पर अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 दिया। पश्चिम अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 विचारों पर समझौते पर हस्ताक्षर करते और अपने अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 अंतरराष्ट्रीय देण देण के लिए अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 प्रतिव्यय को मानने का तयार नहीं। परंतु श्रीमती गांधी अनेक अनेक अनेक अनेक  
 अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 भी तैयार नहीं है कि अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 करने की स्वतंत्रता दी गई होगी प्रकार परिष्कृत वातावरण के लिए अनेक अनेक  
 के विकास और उपयोग में भारत ने अपनी स्वतंत्रता कायम रखी।  
 इसका साहज्य अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक

श्रीमती गांधी ने आरंभ-काल से ही भारत ने उपग्रह युग में प्रवेश  
 किया। प्रायः अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 कहानी है कि जु १९७१ में अमेरिका "गंगा" अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 से भारत के गांधी में दूरदर्शन का प्रसारण पटुचा पर एक नई संचार अनेक  
 का प्रारंभ किया जो अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक  
 उपग्रह से अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक अनेक

लिए धमरी की उपग्रह की सेवाएं प्राप्त कर उसके 'मॉडेम'-से-देश के लगभग 2400 गावों में जहाँ यह प्रसारण परंपरागत माध्यमों के माध्यम से कृषि, पशुपालन, स्वास्थ्य, परिवार-कल्याण-कर्म-ज शिक्षण के वैज्ञानिक कार्यक्रम प्रसारित करने का अभिनव प्रयोग किया गया।

सोमाश्वत देश के 6 राज्यों में लिए गए प्रयोगात्मक प्रसारण का लाभ राजस्थान के चार सौ गावों को भी मिला और कोटा, सवाई माधोपुर और जयपुर जिले के सुदूरस्थ गांवों के निवासियों इससे लाभान्वित हुए। राजस्थान में दूरदर्शन का यह पहला प्रयोग था और गांववासी महाभारत काल में सजय द्वारा घोरराजा घतराष्ट्र को युद्ध का घासों देखा हाल तथा अन्य पौराणिक चमत्कारों को अपने सामने अपने ही गांव में देखकर चमत्कृत थे। ग्रामीण क्षेत्रों की छोटी छोटी शालाओं में, जहाँ वैज्ञानिक शिक्षण तो क्या बैठने के लिए टाट पट्टी भी उपलब्ध नहीं थी, दूरदर्शन के माध्यम से बालकों को विज्ञान की शिक्षा देने का प्रयोग भी बहुत सफल रहा और उसी से प्रभावित होकर इंदिरा जी ने दूरदर्शन का देश के गांव गांव में प्रचार व प्रसार करने की योजना को त्रिधावित करवाया जब 'नासा' उपग्रह की ही तरह इसे। बी (भारतीय उपग्रह) का उपयोग किया जा रहा है। जो न केवल दूरदर्शन व टेलीफोन जैसे संचार माध्यमों में बल्कि भूगर्भीय और पर्यावरणीय अध्ययनों में भी बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है। अपनी मृत्यु तक इंदिरा गांधी ने सम्पूर्ण भारत में दूरदर्शन के इतने केन्द्र स्थापित करवा दिये कि लोग दूरदर्शन को इंदिरा दर्शन के नाम से पुकारने लगे थे। प्रत्येक दिन 11 बजे की शीत से खुलते हुए यह दूरदर्शन केन्द्र जनता को न केवल मनोरंजन का साधन दे गए वरन् अनौपचारिक शिक्षण का माध्यम भी बन गए। उनके जीवित रहते हुए भी और मृत्युपरांत भी वास्तव में इंदिरा ने कल्पना भी नहीं की होगी कि जिन दूरदर्शन केन्द्रों को वह हर प्रातः में व देश के कोने कोने में सौजन्य का उपक्रम करवा रही है वह उनकी मृत्युपरांत भी सम्पूर्ण भारत

वा उनके दर्शन करवा देगा और जन मानस पर ऐसी छाप छोड़ेगा जिसकी प्रतिश्रिया आने वाले चुनाव में स्पष्ट दीसेगी । विदम्बना है कि बहुत से भारतवासिया ने केवल इनी दूरदगन के माध्यम से ही अपनी दिवगत नेता के दर्शन किए व उसकी प्रतिम यात्रा में भाग लिया ।

अक्सर श्रीमती गांधी पर सोवियत सच के प्रति अधिक सम्मान वा आरोप लगाया जा रहा है किन्तु यह भुला दिया जाता है कि राष्ट्रहित मानकर जिस दिशा से भी सहयोग मिला उसे ही उ हाने अनेक कार्यक्रमों की क्रिया वृत्ति के लिये स्वीकार किया । आरामित्र उपग्रह सम्बन्धी प्रयोगों के लिये जहाँ उ होने अमरीका की विकसित तकनीक ली वहाँ भारतीय उपग्रह छोड़ने तथा भारतीयों को अन्तरिक्ष में भेजने के कार्य में सोवियत रूस का अपना सहयोगी बनाया । सोवियत रूस के सहयोग से दो भारतीयों राकेश शर्मा व रवीन्द्र मलहोत्रा को अन्तरिक्ष यात्रा के लिये प्रशिक्षित कराया । उसमें राकेश शर्मा की प्रथम भारतीय ही नहीं प्रथम एशियायी यात्री का गौरव दिलाने में इंदिरा जी का सहयोग व प्रेरणा की भूमिका मुख्य रही । क्या उपलब्धि हुई यह प्रश्न कई पूछते हैं और पूछेंगे भी कि तु उत्तर यही है कि आरम्भिक उपलब्धियों का जायजा लेने पर तो हिमालय की ऊँचाइयों को छूती नजर नहीं आती लेकिन भारतीयों के लिये यह कम गौरव की बात नहीं है कि हममें से एक विश्व की परिधि से परे अन्तरिक्ष की यात्रा का अवसर प्राप्त कर चुका है । हमारे अग्र पड़ोसी या तीसरी दुनिया के लोग इसकी कल्पना भी नहीं कर पा रहे थे ।

अन्तरिक्ष की ही नहीं समुद्र की गहराइयों में भी भारतीय वैज्ञानिकों ने खोज की शुरुआत की । श्रीमती गांधी ने दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में भी भारतीय अभियान दल भेजने की पहल दिखाई और उही की प्रेरणा से वहाँ हमारे वैज्ञानिकों ने एक स्थाई प्रयोगशाला स्थापित करने की सफलता प्राप्त की ।

विज्ञान व नई तकनीक का देश के विकास कार्यों में उपयोग करने की नीति का प्रारम्भ तो प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू के समय में ही हो गया था। मार्च 1958 में संसद ने एक प्रस्ताव द्वारा इस नीति पर अपनी मुहर लगा दी थी किंतु श्रीमती गांधी ने विज्ञान व तकनीक का एक स्वतंत्र विभाग ही बचाने का प्रयास कर दिया और इसका प्रसार भी उन्होंने अपने पास ही रखा। यह सिद्ध करता है कि देश की प्रगति का वैज्ञानिक आधार देने के लिये वह कितनी सचेष्ट थी और इस कार्य को कितना महत्व देती थी। परंतु श्रीमती गांधी ने भारत की मूल संस्कृति और ग्रहण को आधुनिक वस्तुओं से धुमिल नहीं होने दिया। उनका सदा ही प्रयास रहा कि विज्ञान का प्रयोग देश की गरिबी और अज्ञान को दूर करने के लिये ही किया जाय। आणविक परीक्षण भी केवल उन्होंने इसी निर्माण कार्य में सहायक के रूप में उपयोग करने के लिये किया। विश्व के अन्य देशों की तरह सहायक साधन के रूप में नहीं किया।

इस प्रकार इंदिरा गांधी शक्ति की साधिका तो थी ही शक्ति व दृढ़ता की भी प्रतिभूति थी।

## सफल राजनीतिज्ञ

एक राजनीतिक के रूप में श्रीमती गांधी एक जुझारू औरत थी। यह कथन है श्री जवाहरलाल कोल का कि वह विवाद से विवाद तक जीती रही, विवाद से विवाद तक उमरती रही। सम्भवतः नियति ने उन्हें ऐसे ढाँचे में ढाल दिया था कि व्यक्तिगत क्षणों में अत्यन्त सवेदनशील होने के बावजूद सार्वजनिक जीवन में वह टकराव से ही जीती रही।

वैसे तो राजनीति उनको विरासत में ही मिली थी। उनका लालन-पालन ऐसे वातावरण में हुआ जब सम्पूर्ण परिवार देश के स्वतंत्रता प्रादोलन में वृद्ध चुका था और किसी के पास इतना समय नहीं था कि उनकी बाल सुलभ जिज्ञासा का शांत करे। किंतु समय समय पर मिले पिता के पक्षों ने उन्हें कुछ ऐसी दीक्षा दी कि बाद में उनका रूप सफल

राजनीति के रूप में ही उभर कर आया। पिता के प्रधानमन्त्रीत्व काल में यह उनके शाय परिवार के रूप में ही केवल समन्वयन रही अपितु समय-समय पर अपनी अमूल्य राय देकर और कई बार अपने पिता से असहमत होकर उठने यह सिद्ध कर दिया कि वह केवल मूकदर्शन न रहकर अपने पिता की सहयोगी भी बन सकती थी। 2 जनवरी 1959 में जब यह राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष चुनी गई तो वास्तव में वह राजनीति के रूप में जनमानस के मस्तिष्क पर छाप छोड़ती चली गई। समय 2 पर उठाने यह सिद्ध कर लिया कि वह नेहरू जी की प्रतिष्ठाया मात्र ही नहीं है अपितु वह अपना स्वयं का स्वतंत्र व्यक्तित्व लिये हुए भी है जो न केवल समय-समय पर अपनी अमूल्य राय ही दे सकती है अपितु विद्रोह भी कर सकती है और जिद्दी बाप की जिद्दी बेटी के रूप में कठोर कदम भी उठा सकती है। नेहरू की मृत्यु पश्चात् उह सूचना व प्रसारण मंत्री बनाया गया कि तु उनकी हार्दिक इच्छा विदेश मंत्री बनने की थी। अक्टूबर में वह पेरिस में थी जब उह पता चला कि ख्रुश्चेव पता हो गया है। उनके मन में रूस जाने की इच्छा पैदा हुई। पेरिस से वह लंदन गई और वहां में माशल टीटो के साथ टेलीफोन पर परामर्श किया। माशल टीटो ने उह वेलग्रेड बुलाया इससे पहले वह भारत में विदेश मंत्रालय से सम्पर्क कर चुकी थी। मगर विदेश मंत्रालय ने उह सरकारी प्रवक्ता के रूप में भेजने में कोई रुचि नहीं दिखाई। वह टीटो के सहयोग से रूस पहुंच गई। नए शासकों से उह आश्वासन मिया कि भारत के साथ वही नीति अपनाई जावेगी जो नेहरू व जमाने से चली आ रही है। इंदिरा गांधी का मास्को जाना विदेश मंत्रालय की इच्छा नहीं लगा। स्वयं प्रधानमंत्री शास्त्री जी ने भी इस यात्रा को कोई महत्त्व नहीं दिया। मगर श्रीमती गांधी की इस व्यक्तिगत पहल से उनके चरित्र का वह पहलू उभर कर आया जिसके कारण बाद के वर्षों में उनके प्रतिद्वन्द्वियों को बार-बार मात खानी पड़ी। उनका राजनीतिज्ञ के रूप में भारतीय जन

मानस पर जो चित्र उभर कर आया वह एक ऐश राजनीतिज्ञ का था जो अपने व्यक्तित्व व अपनी इच्छा के सामने किसी को टिकने न दे सके । उतका यह रूप प्रतिम दिन तक रहा कि उनका अद्भुत व्यक्तित्व सभी के ऊपर आया रहा । उनका यह रंग हटकर व मुसालिनी की प्रतिष्ठाया सा अनुभव होता रहा । उनका कांग्रेस पार्टी पर व सरकार पर भाषिण्य व बचस्व चाहे वह केन्द्रीय सरकार हो या राज्य की सरकारें, उनकी पकड़ से अलग न हा सका । यहाँ तक कि जब जो भी उनके दल का प्रतिपक्षी व्यक्ति उभरने का प्रयत्न करता तो उनके अद्भुत व्यक्तित्वके सामने टिक नहीं पाता था । उनकी ही पार्टी व महत्वाकांक्षी व्यक्ति जब उभरने का प्रयत्न करते तो मँडम हाइकमाण्ड (इन नामों से ही यह अन्तिम वर्षों में जानी जाने लगी थी) की आज्ञा का उलघन करने का जीयट नहीं जुटा पाने थे । परिणामस्वरूप अपने प्रधानमंत्री काल के 16 वर्षों में वह एक कूटनीतिज्ञ व सफल राजनीतिज्ञ के रूप में ही जनमानस के हृदयपटल पर छाड रही ।

शास्त्रीजी की मृत्यु पश्चात इंदिरा गांधी व मोरारजी देसाई ने सघन भारत के इतिहास की अविस्मरणीय घटना है । मोरारजी देसाई के लिए उनके ही कथनानुसार (यह सिद्धांत का सवाय था । वह किसी भी तरह पीछे हटने के तैयार नहीं थे । ससद के केन्द्रीय हॉल के बाहर पत्रकारों और वरिष्ठ कांग्रेसी कामकर्त्ताओं का भारी हजूम कुछ ऐसी प्रतीक्षा में खडा था जैसे प्रसवकक्ष के बाहर नाते रिश्तेदारों का जमघट । अंदर कांग्रेस ससदीय दल के नेता का चुनाव हो रहा था । क्यों ही ससदीय मामलों के मंत्री सत्यनारायण सि हा बाहर आये तो किसी न पूछा क्या हुआ लडका या लडकी ? मुस्कराते हुए सि हा न उत्तर दिया लडकी और इसके साथ ही नारे गूँज उठे ' इंदिरा गांधी जिंदाबाद ' यह नारा माने वाले दिनों में देश के हर क्षेत्र में इतना टाहराया गया कि शायद 'जय हिंद'

को छोड़कर स्वतंत्र भारत में कोई और नारा इतनी बार नहीं दोहराया गया। एक प्रश्न के उत्तर में एक बार इंदिरा गांधी ने कहा था, "मैं अपनी माँ की वेटो भी हूँ और पिता की भी। शायद मुझ में दादा के भी कुछ गुण आ गये हैं" मगर वह सबसे भिन्न भी थी। नेहरू परम्परा से उन्हें लगाव प्रवश्य था कि तुम्हें वह परम्परा कुछ विशेष नीतियों तक ही सीमित थी। नेहरू और इंदिरा दोनों की शक्तियों में कुछ मौलिक अंतर भी था। वचन में वह अंतरमुखी थी। नेहरू का व्यक्तित्व पारदर्शी था मगर इंदिरा की चिंतन प्रक्रिया केवल तैयार माल के रूप में बाहर आती थी। वह सस्वर सोचने की आदती नहीं थी। इंदिरा गांधी उस प्राणी की तरह थी जो तभी ध्यानमग्न करता है जब जबाब का रास्ता नहीं मिलता। मगर समर्पण करने के बदले आक्रमण करता है। उनके वचन ही मित्र पुष्प जयकर कहती हैं "इंदिरा गांधी सकट के समय अपनी छिपी हुई शक्तियों को आहूत करने की कला जानती थी" वो शायद उनकी इसी विशेषता से और उनका संकेत था। जब जब इंदिरा जी विपरीत परिस्थितियों में घिर गईं उनके भीतर की शक्ति प्राश्चर्यजनक तेजी के साथ सतह पर आ गई और उनका वह रूप व तेज ही ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण कर गया जो आने वाली पीढ़ियों के लिये न देखा न सुना जैसा अनुभव होगा।

नेहरू परम्परा को इंदिरा जी ने अपनी विदेश नीति में जितना सजा कर रखा उतना घरेलू मामलों में नहीं। वैज्ञानिक तकनीक उन्हें विरासत में मिली थी जिस पर प्रयोग उठाने विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान और प्राधुनिकीकरण के लिये किया। मगर राष्ट्रीय सहमति और साम्प्रदायिक राद्भाघ के मामलों में उन्होंने अपने पिता से कहीं अधिक समझौते किये। अधिक मामलों में उन्होंने अपने पिता से कहीं अधिक समझौते किये। इंदिरा गांधी की बहुत हद तक यथा स्थिरवाद और अल्पकालिक कामवाहियों का ही सहारा लेना पड़ा। मगर इन कामवाहियों को भी उन्होंने राजनीतिक के रूप में ऐसे अनुकूल समय पर पेश किया कि तात्कालिक रूप से वे सफल रही।







